Neel Kamal
Date
Page

"बिहारी"

जीवन परिचय एवं रचना → ये रीतिकाल के रीतिसिद्ध कवि थे। इनका पूरा नाम 'बिहारी लाल' था। ये चौभ्य गौती माथुर चौबे कहे जाते थे। इनका जन्म ग्वालियर के पास बसुआ गोविन्दपुर ग्राम में माना जाता है। डॉ. नगेन्द्र अपने इतिहास-ग्रंथ "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में इनका जन्म 1595 ईस्वी तथा मृत्यु 1663 ई. मानते हैं। इनके पिता का नाम केशव राय था। इनके पिता निम्बार्क सम्प्रदाय के महंत नरहरिदास के शिष्य थे। बिहारी का संबंध राधावल्लभ सम्प्रदाय से था। इन्होंने निम्बार्क सम्प्रदाय के महंत नरहरिदास से दीक्षा ली। एक दोहे के अनुसार इनकी बाल्यावस्था बुन्देलखण्ड में व्यतीत हुई और युवावस्था में ये अपने ससुराल मथुरा में रहे। इनके संतान नहीं थी। ये जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में रहते थे। कहा जाता है कि जिस समय ये जयपुर पहुँचे उस समय राजा जयसिंह अपनी छोटी चौहान रानी के प्रेम में अधिक लीन रहने के कारण राज कार्य को देखने के लिए बाहर कम निकलते थे। तब इन्होंने सरदारों की सलाह से ये दोहा राजा जयसिंह के पास पहुँचाया —

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

इस दोहे के द्वारा राजा जयसिंह बाहर निकले

और तभी से बिहारी का सम्मान अत्यधिक बढ़ गया। प्रसन्न होकर उन्हें काली पहाड़ी नामक ग्राम उपहार में दिया गया तथा प्रत्येक दोहे पर पुरस्कार के रूप में एक मोहर देने का संकल्प भी किया। दोहे बनाने की आज्ञा दी। बिहारी दोहे बनाकर सुनाने लगे और उन्हें प्रत्येक दोहे पर एक मोहर मिलने लगी।

इस प्रकार बनते गए धीरे-धीरे 713 दोहों से युक्त "बिहारी सतसई" ग्रन्थ लिखा गया। इस ग्रंथ को अत्यधिक प्रसिद्धी प्राप्त हुई। बिहारी मूलतः शृंगारिक कवि थे। उनके ग्रंथ का प्रत्येक दोहा हिन्दी-साहित्य में रत्न माना जाता है। इस ग्रंथ पर अत्यधिक टीकाएँ रची गयी। इनमें से कुछ टीकाएँ प्रसिद्ध हैं जो निम्न हैं-

कृष्ण कवि की टीका।
हरिप्रकाश की टीका
लल्लू लाल की लाल चन्द्रिका
सरदार कवि की टीका
सूरति मिश्र की टीका।

बिहारी का सबसे उत्तम और प्रामाणिक संस्करण बड़ी मार्मिक टीका के साथ प्रसिद्ध साहित्य मर्मज्ञ और ब्रज भाषा के प्रधान आधुनिक कवि बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ने लिखी। जितने परिश्रम और सावधानी से इसका सम्पादन हुआ है, उतना आज तक किसी भी ग्रंथ का नहीं हुआ है। बिहारी ने यही एक मात्र ग्रंथ लिखा है जो उनकी कीर्ति का आधार स्तंभ है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने इतिहास-ग्रंथ "हिन्दी साहित्य का इतिहास" में कहते हैं कि इस ग्रंथ में इस के ऐसे छींटे पड़ते हैं कि हृदय थोड़ी देर के लिए प्रसन्न सा उठता है। इस ग्रंथ के कुछ दोहों पर "आर्या सप्तशती," "गाथा सप्तशती" और "अमरू शतक" इत्यादि ग्रंथों का प्रभाव है। इस बात को पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने विस्तार से बताया है। किसी आलोचक ने इनके ग्रंथ पर एक सही बात की है-

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर॥

Scanned with CamScanner

प्रश्न: "बिहारी हिन्दी मुक्तक-काव्य-परम्परा के श्रेष्ठ कवि थे।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए।

बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि थे। उनके द्वारा रचित ग्रंथ "बिहारी सतसई" में दोहा छंदों का समावेश है। इतना होने पर भी उनमें अत्यधिक भावों की व्यापकता है इसलिए किसी आलोचक ने उनके विषय पर कहा है -
"बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।"
साथ ही उनके ग्रंथ के बारे में यह उक्ति कही जाती है -
सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर॥
उनकी अनुभूतियाँ (भावों) जितनी सशक्त है, उतना ही सशक्त उनका अभिव्यक्ति-कौशल भी है। (कला-पक्ष)

वे जानते थे कि सभा और समाजों के लिए दोहा सर्वाधिक उपयुक्त छंद है क्योंकि इसमें कुछ शब्दों के अन्तर्गत ही अपनी काव्य-प्रतिभा को दर्शाया जा सकता है। सफल मुक्तककार के लिए इससे अधिक अच्छा छंद कोई और नहीं हो सकता। एक सफल मुक्तक काव्य की संपूर्ण विशेषताएँ उनके ग्रंथ में उपलब्ध है। मुक्तक उस रचना को कहते हैं जो स्वयं में अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो और जिसमें पूर्व और अपर संबंध हो। उसी कारण 'बिहारी सतसई' एक लोकप्रिय काव्य रचना सिद्ध हुई।

बिहारी के मुक्तक काव्य की विशेषताएँ →

1. भाषा की समास-शक्ति → कम शब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करने के लिए भाषा की समास-शक्ति का प्रयोग बिहारी ने किया। उन्होंने कई उपमेयों को भी दोहे की दो पंक्तियों में सम्मिलित कर विलक्षण सफलता प्राप्त की है। उन्होंने अपने आश्रयदाता राजा जयसिंह की अपनी छोटी चौहान रानी के आसक्ति को इस प्रकार दूर किया - के प्रति
- नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बिंध्यौं, आगे कौन हवाल॥

2. कल्पना की समाहार-शक्ति → बिहारी की काव्य-प्रतिभा का मूल कारण था - उनकी कल्पना-शक्ति। हिन्दी साहित्य में ऐसे कुछ विलक्षण कवि ही हुए हैं जिनमें दूर की सूझ कल्पना के बल पर अपने दोहों में साकार करने की यह शक्ति पायी जाती है। इसके द्वारा उनके काव्य में मधुरता, सरसता, सहजता और चमत्कार उत्पन्न हो गए हैं।

3. चमत्कार का प्रदर्शन → उन्होंने अपने युग के अनुसार अपने काव्य में

चमत्कार के प्रदर्शन की प्रवृत्ति का परिचय दिया। ये परिचय विशेषतः अलंकारों के माध्यम से दिया जाता। बिहारी के काव्य में श्लेष और यमक अलंकारों का चमत्कार अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है-

बनत-बनत बनि जाती है सौ दुनी मादकता अधिकाय।
जेहि पाए बौराय, वेहि पाए ही बौराय॥

बिहारी ने शब्दालंकारों के प्रयोग से दो तरह अर्थों का समावेश करके विशेषतः चमत्कार की सृष्टि की है।

4. बहुज्ञता का प्रदर्शन → बहुज्ञता का अर्थ है- विविध विषयों की जानकारी होना। बिहारी को अनेक विषयों की अच्छी जानकारी थी। उन्हें ज्योतिष, गणित, राजनीति, आयुर्वेद, ब्रजविलास और पुराण आदि का ज्ञान था। उन्होंने अपने संपूर्ण ज्ञान को अपने दोहों में प्रस्तुत किया। उससे यह सिद्ध होता है कि उन्हें लोक और विविध शास्त्रों - दोनों का ज्ञान था। वे मानते थे कि अंक के बिंदी लगा देने पर अंक दस गुना हो जाता है-

बहत सबैं बेंदी दएं, अंक दस गुनें होतु।
तिय लिलार बेंदी दएं, अगनित बढत उदोतु॥

उन्होंने अपने काव्य में प्रचलित त्योहारों, पूर्वी रीति-रिवाजों, खेलों, दर्शन, अध्यात्म और ईश्वर संबंधी जानकारी का उपयोग किया। विविध प्रकार के नायिका-भेदों, भावों, रसों और अलंकारों को प्रस्तुत किया।

5. शृंगार रस की प्रधानता → उनका ग्रंथ मुख्यतः शृंगार रस से युक्त है। उन्होंने शृंगार रस के दोनों भेदों का प्रयोग किया है- संयोग और वियोग। संयोग पक्ष का अत्यधिक सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया गया है। दुख पक्ष की कोई भी स्थिति उनके मेत्रों से बच नहीं पाई है। उन्होंने नायक - नायिकाओं की प्रेम-क्रीड़ाओं, हाव- भाव और नायिका के नखशिख का वर्णन सुंदरता से प्रस्तुत किए हैं। राधा और कृष्ण की क्रीड़ा को उन्होंने प्रस्तुत करते हुए लिखा है-

बतरस लालचलाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हंसै, दैन कहै नटि जाय॥

6. प्रकृति-चित्रण → उन्होंने छः ऋतुओं का स्वतंत्र वर्णन किया है। उन्होंने छः ऋतुओं - ग्रीष्म, बसंत, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं पर दोहे लिखे हैं। उन्होंने मनुष्य के स्वभाव को प्रकृति से प्रभावित माना और प्रकृति एवं मनुष्य - दोनों को आमने-सामने रखकर उसे चित्रित किया। ग्रीष्म की भीषणता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है-

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ॥

गर्मी से घबराकर छाया भी छाया चाहती हुई। गहन वनों में चली गई है और गीत ऋतु में दिन के छोटे होने से सूर्य की किरणों का मान

पर मंजरी के समान घट जमा है। उन्होंने प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण करके अनेक मार्मिक दोहे लिखे हैं। उससे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति का साकार चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित हो जाता है।

7. सरस प्रसंगों का वर्णन → उन्होंने अपने ज्ञान में सागर भरने वाले दोहों के द्वारा जीवन के अनेक प्रसंगों का सरलता के साथ अत्यधिक सुंदर चित्रण किया है। जिसके द्वारा व्यक्ति एक विलक्षण आनन्द को प्राप्त कर सकता है। वे मानते हैं कि सौन्दर्य के आनंद की छटा प्रत्येक क्षण परिवर्तित होती रहती है और यही उसकी नवीनता है। उन्होंने नायक और नायिका के सौन्दर्य का चित्रण करते हुए माना कि "प्रेम" सौन्दर्य का प्रमुख तत्व है। वे मानते हैं कि सौन्दर्य बाहरी न होकर आंतरिक होता है।

8. नीतिगत भावों का चित्रण → उन्होंने अन्योक्ति अलंकार के द्वारा सर्व नीतिगत भावों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने पराए संकेत पर हिंसा को अच्छा नहीं बताना, स्वभाव में परिवर्तन नहीं होना, सोने में दुर्गुण सोना, लोभ के घृणित रूप को बताना, संसार में बुरे मनुष्यों का सम्मान होना और नम्रता को श्रेष्ठ बताना इत्यादि नीतिगत भावों को प्रकट किया। कवि ने विनम्रता को उच्च स्थान देते हुए कहा है

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि सोय।
जे तो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होय॥

उन्होंने संसार की भर्त्सना करते हुए उसकी नश्वरता को प्रकट किया है -

को छूटयो इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यों-ज्यों सुरझि भज्यो चाहत, त्यों-त्यों उरझत जात॥

9. प्रेम का वर्णन → उनका प्रेम का वर्णन हृदय को आकृष्ट करने वाला है। उन्होंने प्रेम की अवस्था की विभिन्न दशाओं का चित्रण बड़ी कुशलता के साथ किया है। यह वर्णन मानवेतर, मैथिल, नेत्र संबंधित दोहों में अधिक अच्छा बन पड़ा है। उन्होंने नायक-नायिका के चाव-भाव एवं प्रेम-क्रीड़ाओं का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। उन्होंने अत्यधिक उत्तम के साथ एक नायिका के सौन्दर्य का चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उसके कजरारे श्वेत नेत्र खंजन पक्षी को लज्जित कर रहे हैं और उसके मुख की आभा के कारण तिथि जानने के लिए "तिथि-पत्र" का आश्रय लेना पड़ रहा है -

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौ ही रहत आनन ओप उजास॥

10. उक्ति-वैचित्र्य → उनका किसी बात को कहने का तरीका अद्भुत था। उन्होंने अपनी प्रतिभा से हमेशा नयी बातें प्रस्तुत की। नवि पराग, मधुर-मधुर और बासन्त तरुक के अभाव में अविकसित कली से ही भ्रमर पूरा रस है। उन्होंने जीवन के निजी अनुभवों को सुंदर चित्रित किया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि बिहारी उच्च कोटि के कवि हैं। वे एक सफल मुक्तक

और शृंगार रस के रस-सिद्ध कवि हैं। इसलिए ये रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि भी सिद्ध हुए हैं।

प्रश्न: बिहारी की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।
अथवा
बिहारी के काव्य-सौष्ठव को विश्लेषित कीजिए।
अथवा
"बिहारी के काव्य में शृंगार, नीति और भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है" इस कथन की विवेचना कीजिए।

बिहारी के काव्य की काव्यगत विशेषताएँ →
बिहारी के काव्य का भावपक्ष →

1. शृंगारिक भावों का वर्णन → उन्होंने शृंगार रस के दोनों पक्षों- संयोग और वियोग का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने संयोग शृंगार के अंतर्गत किसी भी स्थिति को नहीं छोड़ा है। इस पक्ष के अंतर्गत आलम्बन और ~~आलंबन~~ को सुंदर चित्रित करते हुए अधिकांशतः शोभा और रूप को आधार बनाया गया है। इन्होंने नायिका के नखशिख सौन्दर्य का वर्णन, दूत एवं दूतिका से नायक एवं नायिका के पास भेजना, नायक एवं नायिका के हँसी-मजाक, नायिका के स्नान, पतंग बाजी, आँख मिचौली

नायक और नायिका की प्रेम-क्रीड़ाओं, हाव-भाव और अनुभाव आदि का सुंदर वर्णन किया है। कुछ स्थानों पर इन्होंने वर्णन करते हुए अपनी कुशल देवी शोभा के विकास में सफलता से युक्त काम ली है-

"तजि तीरथ हरि राधिका, तन दुति कर अनुराग।
जाकी छाँह चकाचकी, स्याम सुरज लखि जाग॥

नायिका के नखशिख सौन्दर्य के अंतर्गत वर्णन करते हुए उन्होंने नायिका के मुख के सौन्दर्य को देख कर बताया कि उसके चन्द्रमा की चाँदनी का भ्रम हो जाता है-

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पुन्यौ ही रहत आनन ओप उजास॥

इसके अंतर्गत इन्होंने मजाक से युक्त वर्णन को प्रस्तुत करते हुए कवि कहते हैं-

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय॥

नायिका अपने कानों की कोमलता के कारण आभूषणों के भार को सहन करने में असमर्थ है। इसका वर्णन प्रस्तुत करते हुए कवि कहते हैं-

भूषन भार न सम्हारियै, क्यौं इहि तन सुकुमार।
सूधे पाइ न धर परैं, सोभा ही के भार॥

कवि ने अपने एक दोहे में नवरसों का चित्रण करते हुए कहा है-

कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत, लजियात।

अरे मौन में करत हैं, नैनन ही सों बात ॥

जितनी चतुराई से बिहारी ने संयोग शृंगार का वर्णन किया है, उतनी चतुराई वियोग शृंगार में दिखायी नहीं देती है।

उन्होंने वियोग शृंगार का वर्णन दो प्रकार से किया है-

i) संयोग
ii) वियोग
i) संयोग → इसमें नायक - नायिका के परस्पर मिलन का अभाव रहता है।

ii) वियोग → इसमें नायक और नायिका के मिलन के बाद बिछुड़ना दिखाया जाता है। कवि ने वियोग अवस्था में नायिका के आँसुओं का विरह की अग्नि से भाप बनकर उड़ना बताया है। कवि कहते हैं कि नायिका विरह के कारण अत्यधिक दुर्बल हो गयी है-

छत आवत, उत जात है, चली छ: आठक हाथ।
चढी हिंडोरे सी रहैं, लगी उसासन साथ ॥

बिहारी कहते हैं कि रात्रि में सखियाँ जीते वस्त्र पहनकर उस नायिका के पास जाती हैं जो विरह से मुक्त है-

आऊ के आछे बसन, जाड़े ही की रात।
साहस कै कै नेह बस, सखि सिंगि जात ॥

उन्होंने वियोग शृंगार के 4 भेदों - पूर्वराग, मान, प्रवास, करुणा में से ~~दो~~ पूर्वराग और मान का वर्णन अधिक किया है और प्रवास एवं करुणा का वर्णन कम किया है।

2. नीतिगत भावों का चित्रण → उन्होंने अन्योक्ति अलंकार के द्वारा कई नीतिगत भावों को प्रस्तुत किया है। उन्होंने पराए संकेत पर हिंसा को अच्छा नहीं बताना, स्वभाव में परिवर्तन नहीं होना, खोने में दुःख होना, लोभ के क्षणिक रूप को बताना, संसार में बुरे मनुष्यों का सम्मान होना और नम्रता को श्रेष्ठ बताना इत्यादि नीतिगत भावों को प्रकट किया। कवि ने विनम्रता को उच्च स्थान देते हुए कहा है-

नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोय।
जेतो नीचो ह्वै चलै, तेतो ऊँचो होय ॥

उन्होंने संसार की बुराई करते हुए उसकी नश्वरता को प्रकट किया है-

को छूट्यौ इहि जाल परि, कत कुरंग अकुलात।
ज्यौं-ज्यौं सुरझि भज्यौ चाहत, त्यौं-त्यौं उरझत जात।

कवि ने साहित्य और संगीत कला की चतुराई के बारे में यह कहा है-

तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अनबूडे बूडे तरे जे बूडे सब अंग ॥

इन्होंने अपने काव्य में अनेक सूक्तियों का प्रयोग किया है।

Scanned with CamScanner

उ. भक्ति - भावना → रीतिमुक्त के कवि होने पर भी ये राधा और कृष्ण की भक्ति से मुक्त थे। उन्होंने सुख - दुख में ईश्वर को न भूलने की बात कही है। साथ ही राधा - कृष्ण को सांसारिक बाधाओं को हरने वाला बताया है। उन्होंने अपार सम्पत्ति कृष्ण को कहा है -

कोऊ कोटिक संग्रहौ, कोऊ लाख हजार।
मो सम्पति जदुपति सदा, विपत्ति-विदारनहार॥

ये कृष्ण भक्त होने के बावजूद रीतिकाल के प्रभाव से बच नहीं सके। अतः उन्होंने राधा - कृष्ण की भक्ति के सहारे अपनी शृंगारिक भावना को प्रकट किया है। उन्होंने अपनी भक्ति - भावना में बाहरी आडम्बरों का खण्डन किया है। इन्होंने माना कि भक्ति का रंग विचित्र होता है। इसमें व्यक्ति डूब कर अपने मन को उज्ज्वल कर लेता है -

या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों-ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥

उन्होंने कृष्ण और राम की भक्ति एक ईश्वर के रूप में की है। वे मानते हैं कि इनमें कोई अंतर नहीं है। उन्होंने ईश्वर के दोनों रूपों - सगुण एवं निर्गुण का चित्रण अपने काव्य में किया है। लौकिकता में अलौकिकता का समावेश करते हुए कहा है -

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होइ॥

उनकी भक्ति - भावना में सख्य-भाव, दीनता का भाव, नाम-महिमा, आत्म-समर्पण, आत्म - निवेदन तथा सत्संगति इत्यादि का चित्रण सुंदर रूप से हुआ है। शृंगारिक कवि होने पर भी उन्होंने अन्योक्तियों, सूक्तियों पर भक्ति-दोहों की रचना कर कम से कम भक्त की छवि पाने का दावा तो प्रकट कर ही दिया है।

प. लोक-जीवन की झाँकी → इन्हें तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक वातावरण की जानकारी थी। उन्हें हिन्दू जनता की कठिनाईयों और राजाओं के विलासी जीवन की जानकारी थी। अतः उन्होंने लोक-जीवन के दुःख-दर्द, राजाओं की स्वेच्छाचारिता और हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति को कलमबद्ध किया। उन्होंने बताया कि मनुष्य की प्रवृत्ति आसानी से परिवर्तित नहीं होती -

कोटि जतन कोऊ करौ, परै न प्रकृतिहिं बीच।
नल बल जल ऊँचो चढ़ै, तऊ नीच को नीच॥

उन्होंने अपने काव्य में तत्कालीन समाज में व्याप्त अराजकता और उससे प्राप्त होने वाले जनता के दुःखों को चित्रित किया है। कुछ स्थानों पर उन्होंने राजाओं और

Scanned with CamScanner

उनकी राज-व्यवस्था की पोल खोल दी है।

5. कल्पना की समाहार शक्ति → बिहारी की काव्य उत्कृष्टता का मूल कारण था - उनकी कल्पना शक्ति 'हिन्दी साहित्य' में ऐसे कुछ विलक्षण कवि ही हुए हैं जिनमें इस बीज को कल्पना के बल पर अपने दोहों में साकार करने की यह शक्ति पायी जाती है - इसके द्वारा इनके काव्य में मधुरता, सरसता, सहजता और चमत्कार उत्पन्न हो गए हैं।

6. चमत्कार का प्रदर्शन → इन्होंने अपने युग के अनुसार अपने काव्य में चमत्कार के प्रदर्शन की प्रवृत्ति का परिचय दिया। ये परिचय श्लेषता, अलंकारों के माध्यम से दिया गया। बिहारी के काव्य में श्लेष और यमक अलंकारों का चमत्कार अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

इनन - इनन ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
उहिं खाए बौराय, इहिं पाए ही बौराय॥

इन्होंने शब्दालंकारों के उचोच से दोहरे अर्थों का समावेश करके विशेषत: चमत्कार की सृष्टि की है।

7. बहुज्ञता का प्रदर्शन → बहुज्ञता का अर्थ है - विविध विषयों की जानकारी होना। बिहारी ने अनेक विषयों की अच्छी जानकारी थी। उन्हें ज्योतिष, गणित, राजनीति आयुर्वेद, इतिहास और पुराण इत्यादि का ज्ञान था। उन्होंने इनके संपूर्ण ज्ञान को अपने दोहों में प्रस्तुत किया। इससे यह सिद्ध होता है कि उन्हें लोक और विविध शास्त्रों - दोनों का ज्ञान था। ये मानते थे कि अंक के बिंदी लगा देने पर अंक दस गुना हो जाता है -

इत एकै बेंदी दएं, आंक दस गुनौ होतु।
तिय लिलार बेंदी दएं, अगनित बढत उदोतु॥

इन्होंने अपने काव्य में प्रचलित त्यौहारों, पर्वों रीति - रिवाजों, खेलों, दर्शन, अध्यात्म और ईश्वर संबंधी जानकारी का उपयोग किया। विविध प्रकार के नायिका भेदों, भावों, रसों और अलंकारों को प्रस्तुत किया।

8. प्रकृति - चित्रण → इन्होंने छ: ऋतुओं का स्वतंत्र वर्णन किया है। इन्होंने छ: ऋतुओं - ग्रीष्म, वसंत, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर ऋतुओं पर दोहे लिखे हैं। इन्होंने मनुष्य के स्वभाव को प्रकृति से प्रभावित माना और प्रकृति एवं मनुष्य - दोनों को आमने-सामने रखकर उचे चित्रित किया। ग्रीष्म की भीषणता को प्रकट करते हुए इन्होंने लिखा है -

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन - सो कियो, दीरघ दाघ निदाघ॥

Scanned with CamScanner

गर्मी से घबराकर छाया भी छाया चाहती
हुयी गहन वनों में चली गई है और
शीत ऋतु में दिन के छोटे होने से सूर्य
की किरणों का मान घर जंवाई के समान
घट गया है। उन्होंने प्रकृति का आलम्बन
रूप में चित्रण करके अनेक मार्मिक दोहे
लिखे हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि
प्रकृति का साक्षात साकार चित्र नेत्रों के
सामने उपस्थित हो गया है।

9. प्रेम का वर्णन → इनका प्रेम का वर्णन हृदय को आकृष्ट करने वाला है। इन्होंने प्रेम की अवस्था की विभिन्न दशाओं का चित्रण बड़ी कुशलता के साथ किया है। यह वर्णन मानवोत्तर, नायिका, नेत्र संबंधित दोहों में अधिक अच्छा बन पड़ा है। इन्होंने नायक और नायिका के हाव- भाव एवं प्रेम क्रीड़ाओं का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है। इन्होंने अत्यधिक प्रेम के साथ एक नायिका के सौन्दर्य का चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उसके काजल से युक्त नेत्र खंजन पक्षी को लज्जित कर रहे हैं और उसके मुख की आभा के कारण तिथि जानने के लिए "तिथि पत्र" का अभ्यास लेना पड़ रहा है-

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौं ही रहत आनन ओप उजास॥

10. उक्ति - वैचित्र्य → इनका किसी बात को कहने का तरीका अद्भुत था। इन्होंने अपनी उक्तियों से हमेशा नई बातें प्रस्तुत की। कवि पराग, मधुर-मधुर और बसन्त ऋतु के अभाव में अविकसित कली से ही भ्रमर जुड़ रहा है। इनके जीवन के निजी अनुभवों को सुन्दर चित्रित किया है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि बिहारी उच्च कोटि के कवि हैं। ये एक सफल मुक्तककार और श्रृंगार रस के रससिद्ध कवि हैं इसलिए ये रीतिकाल के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि भी सिद्ध हुए हैं।

Scanned with CamScanner

Date
Page

Date
Page

कथनपत्र →

1. भाषा और शैली → इनकी भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है और उस पर बुन्देलखण्डी और पूर्वी का प्रभाव है। इनकी भाषा नाद-सौन्दर्य से युक्त है। भाषा में कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया गया है। कुछ स्थानों पर शब्दों को तोड़ा भी गया है। उक्ति-वैचित्र्य का पूरा ध्यान पर दिखाई देता है। इनकी भाषा में शब्दों को हथकर अन्य शब्द नहीं लगाम जा सकते हैं। इनके काल में संस्कृतनिष्ठ सामासिक पदों की भरमार है। इन्होंने तत्सम शब्दों का प्रयोग करके अपनी भाषा को ओढ़ और सुन्दर रूप प्रदान किया है। नायिका की सुकुमारता का वर्णन करते समय इनका शब्द-चयन अद्भुत दिखाई देता है। इन्होंने अपने काव्य में समास-शैली को अपनाया है। काव्य-रूप की दृष्टि से इनका साहित्य मुक्तक है। इसके अंतर्गत इन्होंने जीवन के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है।

2. अलंकार-योजना → इन्होंने अपने काव्य में शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का प्रयोग अच्छे प्रकार से किया है। अलंकारों के प्रयोग से इनके काव्य में चमत्कारिकता आ गयी है। इन्होंने अनुप्रास,

Scanned with CamScanner

यमक, श्लेष, रूपक, अतिशयोक्ति और अन्योक्ति अलंकारों का अच्छा वर्णन किया है। संयोग में अन्योक्तियों का और नायिका के सौन्दर्य, विरह-वर्णन और प्रकृति-वर्णन में अतिशयोक्तियों का आश्रय लिया है। अतिशयोक्ति अलंकार का एक उदाहरण इस प्रकार है -

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौ ही रहत आनन ओप उजास॥

3. छंद-योजना → इसके अंतर्गत उन्होंने दोहा और सोरठा छंदों का प्रयोग किया है। ये छंद देखने में छोटे लगते हैं परन्तु इनमें भावों की गंभीरता अत्यधिक विद्यमान है।

4. रस-योजना → रसों में उन्होंने रसराज "शृंगार" का प्रयोग विशेषत: किया है। संयोग शृंगार का वर्णन वियोग शृंगार की अपेक्षा अधिक सुंदर है। इन्होंने इसके अंतर्गत हाव-भाव और अनुभाव-योजना इस प्रकार से प्रस्तुत की है कि पाठकों के सामने सजीव चित्र उभरने लगता है -

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करे भौंहनु हंसै, दैन कहै नटि जाय॥

5. गुण-योजना → इसके काव्य में निराम सुख माधुर्य गुण विशेषत: दिखाई देता है। वैसे भी शृंगार वर्णन में वैदर्भी गुण की ही प्रधानता देखी जाती है।

6 शब्द-शक्ति-योजना → उन्होंने अपनी भाषा में सर्वत्र लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्तियों का प्रयोग किया है।

7. लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग → इन्होंने अपनी भाषा में लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी किया है -

लाल लगाम न मानही, नैना मो वस नाहिं।
ज्यों मुहँ त्यौर तुरंग लौं, ऐंचत हूँ चलि जाहिं॥

...शील पात्र एवं भाव के ... कहे जा सकते हैं।

बिहारी (1595-1663 ई.)

बिहारी की सौन्दर्य भावना

बिहारी शृंगार के रससिद्ध कवि हैं। नारी, प्रकृति एवं भाव सौन्दर्य के चितेरे बिहारी की एकमात्र कृति **'बिहारी सतसई'** का जितना मान-सम्मान हिन्दी जगत में हुआ उतना बहुत कम ग्रन्थों को मिल पाता है। इसका एक-एक दोहा एक-एक रत्न माना जाता है। बिहारी सतसई की पचासों टीकाएं अब तक हो चुकी हैं। मुक्तक शैली में रचित इस कृति में वे सभी गुण विद्यमान हैं जो सफल मुक्तक काव्य के लिए आवश्यक माने गए हैं।

बिहारी सौन्दर्य के चितेरे हैं। वे सौन्दर्य की सत्ता 'आत्मगत' मानते हैं 'वस्तुगत' नहीं। यह तो देखने वाले की दृष्टि है जो किसी भी चीज को सुन्दर बना देती है। कोई वस्तु अपने में सुन्दर या असुन्दर नहीं होती। मन जिधर और जितनी रुचि दिखाता है, वह वस्तु हमें उतनी ही सुन्दर प्रतीत होने लगती है :

समै समै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय।
मन की रुचि जेती जितै तित तेती रुचि होय॥

स्पष्ट ही बिहारी 'द्रष्टा' की दृष्टि में सौन्दर्य मानते हैं। वस्तु वही है, पर एक समय में वही सुन्दर और दूसरे समय में वही कुरूप प्रतीत होती है। बिहारी की मान्यता है कि सौन्दर्य की छटा तो प्रतिपल परिवर्तित होती है, यही उसकी नवीनता है और इसी कारण वह कभी पुराना नहीं पड़ता। नायिका के सौन्दर्य का चित्रण करने के लिए बड़े-बड़े चतुर चित्रकारों ने प्रयास किया पर वे सब मूढ़मति सिद्ध हुए, कोई भी उसकी सही तस्वीर नहीं उतार पाया क्योंकि तस्वीर बनाने के बाद जब 'असल' से उसका मिलान किया जाता तो उसमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका होता :

लिखन बैठि जाकी सबी गहि-गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर॥

बिहारी नारी सौन्दर्य के चितेरे हैं। उसके अंग-प्रत्यंग का मनोहर एवं चित्ताकर्षक चित्र 'सतसई' में उन्होंने अंकित किया है :

अंग-अंग छबि की लपटि उपटति जाति अछेह।
खरी पातरीऊ तऊ लगै भरी सी देह॥

नायिका के अंग-प्रत्यंग से सौन्दर्य की ऐसी लपटें उठ रही हैं कि वह अत्यधिक दुबली-पतली होने पर भी सौन्दर्य की परतों के कारण भरे हुए शरीर वाली (अर्थात् हृष्ट-पुष्ट) लग रही है।

नायिका के नेत्र शृंगार रस में स्नान किए हुए हैं, उनमें से शृंगार रस टपक सा रहा है। वे नेत्र अपनी स्वाभाविक श्यामता से ऐसे काले हैं कि बिना काजल लगाए हुए भी वे खंजन पक्षी को लज्जित कर देते हैं :

रस सिंगार मज्जनु किए कंजनु भंजनु दैन।
अंजनु रंजनु हू बिना खंजन गंजन नैन॥

Scanned with CamScanner

नायिका का सुन्दर मुख पूर्णिमा के चन्द्र की भांति प्रकाशित हो रहा है। उसके मुख की आभा के प्रकाश से वहां सदैव पूर्णिमा ही रहती है, अतः तिथि जानने के लिए वहां तो 'तिथिपत्र' का ही आश्रय लेना पड़ता है :

पत्रा ही तिथि पाइए वा घर के चहुं पास।
नित प्रति पून्यौं ही रहत आनन ओप उजास॥

बिहारी ने केवल नायिका के सौन्दर्य का ही वर्णन नहीं किया अपितु नायक के सौन्दर्य का भी चित्रण किया है। एक नायिका अपने नेत्रों की दशा का वर्णन करती हुई दूसरी सखी से कहती है :

हरि छवि जल जब तें परे तब तें छिन बिछुरै न।
भरत, ढरत, बूड़त, तरत, रहत घरी लौं नैन॥

नायक के अंग-प्रत्यंग की शोभा में नायिका का चित्त इस प्रकार हो गया है जैसे भंवर में पड़ी नाव, जो बार-बार वहीं चक्कर लगाती है और अन्ततः उसमें डूब जाती है :

फिरि-फिरि चितु उत ही रहतु टुटी लाज की लाव।
अंग-अंग छवि झौर में भयो भौंर की नाव॥

बिहारी की धारणा है कि सौन्दर्य का प्राण तत्व तो प्रेम ही है। सौन्दर्य की सार्थकता प्रेम भरी दृष्टि से ही है। यदि सुन्दरता को किसी ने प्रेम भरी दृष्टि से नहीं देखा तो उस सौन्दर्य की सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। शरीर भी उतनी ही 'शोभा' धारण करता है जितना 'प्रेम' उसके प्रति रहता है :

जयपि सुन्दर सुघर पुनि सगुनौ दीपक नेह।
तऊ प्रकास करै तितौ भरिये जितौ सनेह॥

बिहारी सतसई में नारी सौन्दर्य के साथ-साथ भाव सौन्दर्य एवं प्रकृति सौन्दर्य की छटा भी विद्यमान है। सौन्दर्य बाह्य रूपाकार में नहीं होता अपितु उसकी सत्ता आन्तरिक होती है। नेत्रों के सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बिहारी कहते हैं कि युवावस्था में प्रायः सभी तरुणियों के नेत्र नुकीले एवं बड़े-बड़े हो जाते हैं, किन्तु दृष्टि निक्षेप की कला तो किसी ही किसी (विरली युवती) में होती है :

अनियारे दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछू जिहि बस होत सुजान॥

भाव सौन्दर्य के अन्तर्गत बिहारी ने हाव, भाव एवं अनुभाव योजना के द्वारा रमणीय दृश्यों का विधान किया है। यथा प्रथम समागम के अवसर पर नायिका की चेष्टाओं का सौन्दर्य देखते ही बनता है :

भौंहनु त्रासति मुख नटति आंखिनु सौं लपटाति।
ऐंचि छुड़ावति करु इँची आगे आवति जाति॥

भौंहों से डराती है, मुख से ना-ना करती है, किन्तु आंखें कुछ और कहकर लिपटती सी जान पड़ती हैं। हाथ खींचकर छुड़ाने का प्रयास करती है, किन्तु इस प्रक्रिया में स्वयं आगे खिंची चली आती है।

राधा-कृष्ण की चेष्टाओं, वाक्य विनोद एवं उनमें चलने वाले परिहास का भी सुन्दर चित्रण बिहारी ने अपने निम्न दोहे में किया है :

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करै भौंहनु हंसै दैन कहै नटि जाय॥

वार्तालाप के लालच में राधा ने कृष्ण की मुरली छिपाकर रख दी है। जब कृष्ण मुरली मांगते हैं तो वह सौगन्ध खाकर कहती है कि मैंने तुम्हारी मुरली नहीं ली, किन्तु कृष्ण समझ जाते हैं कि मुरली इसी के पास है क्योंकि राधा अपनी भौहों में ही चतुरता से मुस्काती है। कृष्ण जब उसकी चालाकी ताड़कर अपनी मुरली मांगते हैं तो वह फिर मुकर जाती है।

प्रकृति सौन्दर्य के भी विविध रूप सतसई में उपलब्ध होते है। वासन्ती पवन का चित्रण उसकी समस्त विशेषताओं के साथ बिहारी ने हाथी के सांगरूपक से निम्न दोहे में किया है :

रनित भृंग घण्टावली झरित दान मधु नीर।
मन्द-मन्द आवतु चल्यो कुंजर कुंज समीर॥

भ्रमर रूपी घण्टावली को बजाता हुआ, मकरन्द रूपी मद को गिराता हुआ कुंज समीर रूपी कुंजर (हाथी) मन्द-मन्द चला आ रहा है वासन्ती पवन की तीनों विशेषताएं शीतल, मन्द, सुगन्ध यहां दिखाई गई हैं।

बिहारी सौन्दर्य के कुशल चितेरे हैं। सौन्दर्य की विविध छटाएं उनके काव्य में दिखाई पड़ती हैं। उनके काव्य की विषय वस्तु भी आकर्षक है तथा उनकी अभिव्यक्ति क्षमता भी उसी परिमाण में रमणीय है। यही कारण है कि उनकी सतसई अत्यन्त लोकप्रिय रचना है। दोहे जैसे छोटे छन्द में इतने सारे भावों का समावेश करने के कारण ही यह कहा जाता है कि उन्होंने **गागर में सागर भर दिया है।** बिहारी सतसई के दोहों की प्रशंसा करते हुए इसीलिए एक आलोचक ने कहा है :

सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर॥

निश्चय ही बिहारी सौन्दर्य के कवि हैं। सुन्दरता को देखकर उसको इस रूप में प्रस्तुत करना कि वह दूसरों को भी चित्ताकर्षक लगे, समर्थ कवि की क्षमता ही होती है। कहना न होगा कि बिहारी इस कार्य में पूर्ण सफल रहे हैं।

बिहारी की बहुज्ञता

जो कवि जितना शास्त्रज्ञ, पण्डित एवं प्रतिभा सम्पन्न होगा उसकी कविता में उतनी ही व्यापकता, विशदता एवं बहुज्ञता उपलब्ध होगी। बहुज्ञता का अर्थ है विविध विषयों की जानकारी। आचार्य मम्मट ने काव्य हेतुओं की चर्चा करते हुए स्पष्ट किया है कि कवि 'लोकशास्त्र के अवेक्षण' में निपुण होना चाहिए तभी वह उत्तम काव्य की रचना कर पाने में समर्थ

Scanned with CamScanner

होता है। बिहारी प्रतिभा सम्पन्न कवि होने के साथ-साथ विविध विषयों की जानकारी से सम्पन्न लोक एवं शास्त्र में निपुण कवि थे। उनके द्वारा रचित दोहों में विविध विषयों की जानकारी समाहित है। यह जानकारी एक ओर तो उनके 'लोकज्ञान' का परिचय देती है तो दूसरी ओर विविध शास्त्रों यथा—आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, चित्रकला, इतिहास, पुराण, राजनीति एवं नीतिशास्त्र की जानकारी की भी परिचायक है। बिहारी की बहुज्ञता का निरूपण निम्न शीर्षकों में किया जा सकता है :

1. **ज्योतिष की जानकारी**—बिहारी दरबारी कवि थे और जयपुर (आमेर) ज्योतिष का प्रसिद्ध केन्द्र था। ज्योतिष से सम्बन्धित अनेक 'योगों' का वर्णन बिहारी के दोहों में है। उनकी इन उक्तियों को देखकर यह निष्कर्ष निकालना पड़ता है कि बिहारी को ज्योतिष की बड़ी अच्छी जानकारी थी। राजयोग प्रकरण का उल्लेख निम्न दोहे में है :

सनि कज्जल चख-झख लगन उपज्यो सुदिन सनेह।
क्यों न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेस सब देह॥

ज्योतिष में बताया गया है कि जब मीन लग्न में शनि ग्रह उपस्थित होता है तो ऐसे ग्रहयोग वाला जातक राजा बनता है। इस राज योग को बिहारी ने यहां नायिका के प्रसंग में घटित किया है। एक सखी नायिका को आश्वस्त करती है—अरी जब तू अपनी मछली जैसी चंचल आंखों में काजल लगाए हुए थी, तेरी उस सुन्दरता को देखकर नायक के हृदय में तेरे प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। अब यह तो राज योग बन गया है क्योंकि मीन (मछली जैसी आंखों में) के साथ शनि (काजल) का ग्रह योग है, अतः वह प्रेम निश्चय ही राजा बनकर नायक के सर्वांग (शरीर) पर अधिकार करेगा। अर्थात् तू निश्चिन्त रह नायक तुझे छोड़कर किसी अन्य से प्रेम कर ही नहीं सकता।

इसी प्रकार उन्होंने निम्न सोरठे में **'वर्षा योग'** का विधान किया है :

मंगल बिन्दु सुरंग मुख ससि केसर आड़ गुरु।
इक नारी लहि संग रसमय किय लोचन जगत॥

ज्योतिष में बताया गया है कि यदि चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति ये तीनों किसी एक नाड़ी पर हों तो संसार में घनघोर वर्षा होती है। बिहारी ने इस वर्षा योग को श्रृंगार के प्रसंग में नायिका पर घटित किया है। नायिका का मुख चन्द्रमा है, लाल रंग की बिन्दी मंगल ग्रह है तथा केसर का पीला तिरछा तिलक बृहस्पति है। इन तीनों ने एक ही स्त्री रूपी नाड़ी का योग पा लिया है इसीलिए नेत्र रूपी संसार प्रेम रूपी जल से युक्त हो गया है। भाव यह है कि जो भी नायिका को देखता है उसके नेत्रों में प्रेम बरसने लगता है।

2. **आयुर्वेद की जानकारी**—बिहारी ने अपने कई दोहों में आयुर्वेद की जानकारी होने का परिचय भी दिया है। वे जानते थे कि विषम ज्वर का उपचार सुदर्शन चूर्ण है। निम्न दोहे में इस जानकारी का उपयोग 'श्लेष' का समावेश करते हुए किया गया है :

यह विनसत नग राखि कैं क्यों न सुजस जग लेहु।
जरी विषम जुर ज्याइए आय सुदरसन देहु॥

सखी (दूती) श्रीकृष्ण से कहती है कि इस विनष्ट होते हुए स्त्री-रत्न की रक्षा करके आप संसार में यश क्यों नहीं प्राप्त करते? यह तो वियोग रूपी विषम ज्वर से पीड़ित है आप आकर सुन्दर दर्शन रूपी सुदर्शन चूर्ण दे दें यह अपने आप 'जी' जाएगी। भाव यह है कि जैसे विषम ज्वर सुदर्शन चूर्ण देने से दूर हो जाता है वैसे ही इस नायिका का वियोग दुख आपके सुदर्शन (सुन्दर दर्शन) पाकर स्वतः दूर हो जाएगा और आपको 'यश' मुफ्त में मिलेगा कि आपने उसे स्वस्थ कर दिया।

इसी प्रकार नपुंसकता को दूर करने के लिए वहां 'पारा' देने की बात भी कही गई है :

बहु धनु लै अहसानु कै पारो देत सराहि।
बैद बधू हंसि भेद सौं रही नाह मुंह चाहि॥

वैद्य जी ने नपुंसकता को दूर करने के लिए बहुत सारा धन उस व्यक्ति से ऐंठ लिया और ऊपर से अहसान करते हुए पारा दिया। अपने पति की कुटिलता को देखकर वैद्य की पत्नी व्यंग्य से मुस्कराने लगी—यह सोचते हुए कि यदि यह पारा इतना गुणकारी है तो वैद्य जी इसे स्वयं क्यों नहीं खा लेते क्योंकि वे भी तो नपुंसक हैं।

3. **राजनीति की जानकारी**—बिहारी ने श्रृंगार वर्णन के अन्तर्गत राजनीति की जानकारी का उपयोग भी किया है। राज्य के अंगों की बात उन्होंने इस दोहे में कही है। चतुर राजा अपने सहायकों की पद वृद्धि करके सुशासन स्थापित करता है :

अपने अंग के जानि कैं जोबन नृपति प्रबीन।
तन मन नैन नितम्ब कौ बड़ो इजाफा कीन॥

यौवन रूपी राजा ने अपना सहायक समझकर नायिका के स्तन, नेत्र, नितम्ब और मन (की चतुराई) में बड़ी भारी वृद्धि कर दी है।

वे यह भी बताते हैं कि यदि सेना का हरावल दस्ता कमजोर हो तो मुख्य सेना पर अचानक विपत्ति आ पड़ती है :

जुरे दुहुनि के दृग झमकि रुके न झीनै चीर।
हलुकी फौज हरौलु ज्यों परत गोल पर भीर॥

द्वैत शासन प्रणाली में प्रजा को जो अत्याचार एवं कुशासन झेलना पड़ता है, उसका उल्लेख वे इस दोहे में करते हैं :

दुसह दुराज प्रजानु कौ क्यों न बढ़ै दुख दुन्द।
अधिक अंधेरो जग करै मिलि मावस रवि चन्द॥

4. **नीतिशास्त्र की जानकारी**—बिहारी सतसई में नीति के अनेक दोहे हैं, जो उनकी नीतिशास्त्र की जानकारी का प्रामाणिक

Scanned with CamScanner

परिचय देते हैं। वे जानते हैं कि आज इस दुनिया में दुष्टों को पूजा जाता है, भले व्यक्तियों का तिरस्कार होता है :

बसै बुराई जासु तन ताही को सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़िए खोटे ग्रह जप दानु॥

वे यह भी जानते हैं कि केवल गुण ग्राहक ही गुणों का सम्मान कर सकते हैं। किसी गुणी व्यक्ति को, जो तिरस्कार पाने से हताश हो गया है, वे समझाते हुए कहते हैं :

चल्यो जाइ ह्यां को करै हाथिनु के व्यापार।
नहिं जानतु इहि पुर बसत धोबी ओड़ कुम्हार॥

अरे तू यहां से चला जा, यहां हाथियों का व्यापार करने वाला कोई नहीं है। क्या तू जानता नहीं कि इस गांव में तो धोबी, ओड़ (ईंट ढोने वाल) और कुम्हार बसते हैं जिन्हें गधों से काम पड़ता है, हाथियों से उनका क्या वास्ता?

5. **इतिहास-पुराण की जानकारी**—बिहारी ने यत्र-तत्र इतिहास-पुराण के ज्ञान का परिचय अपने दोहों में दिया है। उन्हें महाभारत के उस प्रसंग की जानकारी है जिसमें बताया गया है कि दुर्योधन को जलस्तम्भन क्रिया आती थी जिसके प्रभाव से वह सरोवर में जा छिपा और जल से अप्रभावित रहा :

विरह बिथा जल परस बिन बसियतु मो मन-ताल।
कछु जानत जल थंभ विधि दुरजोधन लौं लाल॥

हे प्रिय आप मेरे मन रूपी सरोवर में विरह-व्यथा रूपी जल का स्पर्श किए बिना निवास करते रहते हैं। यह देखकर मुझे तो लगता है कि आप दुर्योधन की भांति कोई जलस्तम्भन क्रिया अवश्य जानते हैं।

इसी प्रकार उन्हें श्रीकृष्ण द्वारा अघासुर के वध का वृत्तान्त भी पता था जिसका उल्लेख वे निम्न दोहे में करते हैं :

यौं दल काढ़े बलक तैं तैं जयसिंह भुवाल।
उदर अघासुर के परैं ज्यों हरि गाइ गुवाल॥

6. **गणित की जानकारी**—बिहारी ने गणित की यत्किंचित जानकारी का प्रयोग भी सतसई में किया है, किन्तु एक दो स्थानों पर गणित के सामान्य ज्ञान को देखकर यह कह देना ठीक नहीं है कि बिहारी बहुत बड़े गणितज्ञ थे। वे जानते थे कि अंक के आगे बिन्दी लगा देने पर अंक दस गुना हो जाता है, किन्तु स्त्री के मस्तक पर बिन्दी लगा देने से उसका मूल्य अगणित गुना बढ़ जाता है :

कहत सबै बेंदी दएं आंकु दस गुनो होतु।
तिय लिलार बेंदी दएं अगनित बढ़तु उदोतु॥

अंक के आगे बकार लगा देने से जिस प्रकार रुपयों में बदल जाता है और उसका मूल्य बढ़ जाता है, उसी प्रकार कुटिल अलकों से नायिका के मुख सौन्दर्य में अगणित गुनी वृद्धि हो गई है :

कुटिल अलक छुटि परत मुख बढ़िगौ इतौ उदोतु।
बंक बकारी देत ज्यों दाम रुपैया होतु॥

7. **लोक सम्बन्धी जानकारी**—अद्भुत प्रतिभा के धनी बिहारी ने लोक का सूक्ष्म निरीक्षण कर उस ज्ञान का उपयोग अपने काव्य में किया है। लोक में प्रचलित आमोद-प्रमोद से वे भली-भांति अवगत थे इसीलिए उनकी सतसई में कहीं पतंगबाजी का वर्णन है, तो कहीं कबूतरबाजी का, कहीं चौगान का उल्लेख है तो कहीं 'आखेट' का। यथा :

सरस सुमिल चित-तुरंग की करि-करि अमित उठान।
गोइ निबाहै जीतिए खेलि प्रेम चौगान॥

इतना ही नहीं अपितु बिहारी ने प्रचलित अन्धविश्वास जादू-टोनों, आदि का भी वर्णन किया है। चोरी का भेद खोलने के लिए वे उस 'कटोरी' का उल्लेख निम्न दोहे में करते हैं जो अभियन्त्रित करके चलाई जाती थी :

वाही त्यों ठहराति यह कविलनबी लौं दीठि।

लोक में प्रचलित त्योहारों होली, आदि का उल्लेख भी उनके दोहों में उपलब्ध होता है।

बिहारी ने दर्शन, अध्यात्म एवं ईश्वर विषयक जानकारी का उपयोग भी अपने दोहों में किया है। उन्हें काव्यशास्त्र एवं काव्यांगों की तो अच्छी जानकारी थी ही वे अन्य शास्त्रों के भी पण्डित थे। बिहारी को 'रीति' (काव्यशास्त्र) की जानकारी थी तथा उस जानकारी का उपयोग करते हुए उन्होंने 'सतसई' की रचना की। भले ही उन्होंने कोई लक्षण ग्रन्थ नहीं लिखा, किन्तु वे 'रीति' में पूर्णतः पारंगत थे, इसीलिए उन्हें रीति सिद्ध कवि कहा जाता है। विभिन्न प्रकार के नायिका भेदों, अलंकारों, भावों एवं रसों के वे मर्मज्ञ थे। निम्न दोहे में खण्डिता नायिका के समग्र लक्षण उपलब्ध हैं, साथ ही मुद्रा अलंकार का प्रयोग भी है :

कत लपटैयतु मो गरे सोनजुही निसि सैन।
जिहि चम्पक बरनी किए गुल्लाला रंग नैन॥

उक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिहारी बहुज्ञ थे, उन्हें विविध विषयों की अच्छी जानकारी थी जिसका उपयोग उन्होंने अपने काव्य में किया है। लोकशास्त्र का ज्ञान भी उन्हें था। लोक के रीति-रिवाज, त्योहार, पर्व, खेल आदि का वर्णन भी उनके दोहों में देखा जा सकता है।

बिहारी की काव्यकला

बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। उन्होंने एकमात्र ग्रन्थ बिहारी सतसई की रचना की, जिसमें 713 दोहे हैं। उन्होंने दोहे जैसे छोटे छन्द में इतने अधिक भावों का समावेश किया है कि आलोचकों को उनके विषय में यह कहना पड़ा है—"बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।" उनकी सतसई के बारे में यह उक्ति प्रायः कही जाती है :

सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें घाव करैं गम्भीर॥

बिहारी की अनुभूतियां जितनी सशक्त हैं उनका अभिव्यक्ति कौशल भी उतना ही सफल है। वे जानते थे कि

Scanned with CamScanner

घनआनन्द

घनआनन्द जीवन परिचय -> (इनके नाम को लेकर विद्वानों में मतभेद है। इनके तीन नाम बहुत समय तक प्रचलित रहे हैं - आनन्द, आनन्दघन, घनआनन्द) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास-ग्रंथ "हिन्दी-साहित्य का इतिहास" के अनुसार इनका जन्म संवत् 1746 तथा मृत्यु संवत् 1796 में हुई है। इनका जन्म दिल्ली में तथा मृत्यु वृंदावन (नादिर शाही) में हुई। (एक जनश्रुति के अनुसार ये अबुल फजल के शिष्य थे। (इनके गुरु का नाम नारायण देव था।) ये मुगल सम्राट मुहम्मद शाह रंगीले के दरबार में मीर मुंशी के पद पर नियुक्त होकर उन्नति करते हुए ~~नियुक्त होकर~~ उनके ~~जी~~ ~~बीजी~~ सचिव बन गये। (ये जाति से कायस्थ थे।) एक जनश्रुति के अनुसार ये दरबार की एक वेश्या सुजान के प्रति आसक्त थे। ये गाते भी थे। दरबार में आमंत्रित करने पर इन्होंने वेश्या सुजान की तरफ मुख करके और मुहम्मद शाह रंगीले की तरफ पीठ करके गाया। इस कारण से क्रोध में आकर मुहम्मद शाह रंगीले ने इन्हें दरबार छोड़ने का आदेश दिया। अतः कुछ दरबारियों की

शाहीबा से तन्हें बरा धर्म को
वर्ण करना पड़ा। (कुछ समय तक वे
खुमान को अपने साथ चलने के
लिए कहा। उसके बात बन्धार करने
पर खुमान के प्रति बनना जैम
बाबा और इलब के जैम में
परिवर्तित से गया।) (वे वृंदावन
में आकर निम्बार्क सम्प्रदाय में
दीक्षित हो गये।)

उस स्थान पर
नादिर शाह के सैनिकों ने बनना
हाथ काट दिया तो मरते समय
बंदीजनों अपने रक्त से एक
कवित्त छन्द की रचना की
जिसकी २ पंक्तियाँ निम्नलिखित
हैं:-

अबार लगे हैं आने वारि के पठान धान,
चाहत चलन मैं संदेसो ले खुमान को।

(उन्होंने ब्रज भाषा में उनकी
रचनायें लिखी हैं। उनकी भक्ति
शान्ता भाव की थी। वे रीतिमुक्त
अथवा स्वच्छन्द धारा के कवि
थे। उनका संबंध रीति काल से
है।)

कुछ विद्वान उन्हें

"रचना की चाकर मूर्ति" कहते हैं
तो कुछ विद्वान उन्हें "प्रेम का
अमर गायक" बताते हैं। (आचार्य
रामचन्द्र शुक्ल उन्हें "याशात्र रस
मूर्ति" कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र
शुक्ल के अनुसार "प्रेम मार्ग का
एक ऐसा प्रवीण और धीर पथिक
तथा अनन्यता का ऐसा मार्ग रखने
वाला ब्रज भाषा का दूसरा कवि
नहीं हुआ है।")

रचनाएँ → उनकी रचनाओं को मुख्यतः
२ भागों में विभाजित किया
जा सकता है-

i) लौकिक शृंगार परक रचनाएँ → इनमें लौकिक
शृंगार प्रमुख
विषय है। ये रचनाएँ कवित्त एवं सवैयों
में लिखी गयी है।

ii) भक्ति परक रचनाएँ → ये रचनाएँ भक्ति-
भावना से पूर्ण
हुई हैं और ये दोहा एवं चौपाई
पद्धति में लिखी गई हैं।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार उनके
द्वारा लिखे गये और प्राप्त हुए कवित्त
एवं सवैयों की संख्या 152,
दोहों एवं ~~चौपाइयों~~ चौपाइयों की संख्या 2354

Scanned with CamScanner

और पत्नी की संख्या [illegible] है।
[illegible] लिखिए हुवली अपूर्ण बनाइए
विशेष बोधि — (1) [illegible]
[illegible]
[illegible] नोट —
[illegible]
[illegible] आधार —
[illegible]
[illegible] —
[illegible]
[illegible]
[illegible] अथवा [illegible]
[illegible] अथवा पद्माकर कवित्त।—
[illegible] यह उनके मुक्तों का
[illegible] है। रसराज ही उनके यश का
आधार है। मिश्रबन्धु, आचार्य मिश्र
ने इसका संपादन किया है। मिश्रबन्धु
आचार्य मिश्र ने उनके सम्पूर्ण काव्य
को 'पद्माकर ग्रन्थावली' के नाम
से [illegible] उनके [illegible]
है।) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के
अनुसार उनके द्वारा रचना की
गयी सौ [illegible] ग्रन्थ
[illegible] के राज पुस्तकालय
में सुरक्षित है। इसमें उनके

[illegible] का वर्णन किया गया है और
विशेषण [illegible] लगे गये
[illegible]

✓ most

घनआनन्द के काव्य की काव्यगत विशेषताएँ विवेचित कीजिए।
अथवा
रीतिकाल के रीतिमुक्त अथवा स्वच्छन्द कवि के रूप में घनआनन्द के काव्य का उदाहरण विश्लेषण कीजिए।

घनआनन्द के काव्य का भाव पक्ष →

1. बंधनहीन लौकिक प्रेम का गहन चित्रण → उनके पदों में "सुजान" शब्द का प्रयोग कई बार मिलता है। वे घनआनन्द की प्रेयसी थी और उनका हृदय उसके सौन्दर्य पर आसक्त था। इसीलिए उन्होंने सुजान के रंगों एवं उसकी छवि का वर्णन खुलकर किया है। वे वर्णन चाहे तो घनआनन्द का से सुजान के प्रति लौकिक प्रेम का से अथवा अलौकिक प्रेम का से। उनके प्रेम-वर्णन में रीतिकालीन वासना की दुर्गन्ध नहीं मिलती है और उसमें रुहपना है। घनआनन्द के इष्ट देव कृष्ण एवं इष्ट देवी राधा सर्वस्व सुजान है। उन्होंने सुजान के प्रति अपने प्रेम को

निवेदित किया है और साथ ही अपना सम्पूर्ण जीवन सुजान को अर्पित कर दिया है। आरम्भ में यह प्रेम लौकिक था परन्तु दरबार छोड़ते समय सुजान के द्वारा उनके साथ चलने से मना करने पर यह प्रेम अलौकिक बन गया।

2. विनम्रता तथा आत्म निवेदन की झाँकी → उनके प्रेम में विनम्रता तथा आत्म निवेदन की झाँकी है। घनआनन्द का सुजान के प्रति निश्छल प्रेम है। वे सभी को महत्त्व देते हुए कहते हैं -

① ✓ अति सूधो स्नेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

उनके प्रेम का मार्ग सीधा एवं सरल है। उसमें वक्रता का नामोनिशान नहीं है। वे अपनी पीड़ा व्यंग्यों के द्वारा संकेत अपेक्षा कर प्रकट करते हैं। उनके आंसुओं को देखकर भी नहीं पिघलने पर वे अपनी प्रिय को निष्ठुरता कह देते हैं। प्रेम के अभाव में उनके नेत्रों की दशा अत्यधिक दयनीय हो

जाती है। वे अपनी प्रिय के अलावा किसी अन्य को नहीं देखना चाहते हैं। कई बार इनकी सम्पूर्ण रात्रि खुली आँखों में व्यतीत हो जाती है। यह विरह में अपने प्रिय की छवि को अपनी आँखों में बसाकर शीतलता के आनन्द को प्राप्त करना चाहते हैं। वे कहते हैं —

सैंडबो न जागिबो हूँ सँसैबो न रोइबो हूँ (7)
प्रेम प्रेम आप ही में चेटक लसति है।
जीवन मरन जीव मीच बिना बन्यौ आय
हाय! कौन विधि रची नेही की रहनि है॥

इनका प्रेम आत्मिक उपासना न होकर साधना उपासना है। इसमें प्रिय के दर्शन की अभिलाषा है। इस प्रेम में अगाध श्रद्धा के साथ अनन्यता है। ये अपनी हृदय की पीड़ा को बादल, पवन, बिजली, मछली, पपीहा, मोर और पतंगा इत्यादि के द्वारा प्रकट करते हैं। —

परजाकी देह को धारि फिरौ परजन्य
जन्यारथ को।

बहु बिधासी सुजान के आँगन मो अँसुवान
को ले बरसो॥

इनके प्रेम में कष्ट सहिष्णुता और आध्यात्मिकता है। ये सुजान की स्मृति में अपना शेष जीवन व्यतीत कर देते हैं। इनके प्रेम में स्वच्छन्दता है परन्तु वह उच्छृंखलता से रहित है। रात्रि के समय इनकी प्रेम की पीड़ा को देखिये —

विरह समीर की झकोरनि अबीर नेह,
नीर भीज्यौ जीव तऊ गुही लौं उघौ रहै॥

3. विरह वर्णन की प्रधानता → सुजान के साथ चलने से मना कर देने पर इनका वियोग प्रारम्भ हो जाता है। उस समय इनका लौकिक प्रेम राधा कृष्ण के अलौकिक प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। वियोग में संयोग की बातें दर्दनाक बन जाती हैं। हृदय में प्रेम की पीड़ा और टीस उठती है। नायिका कोमल की वाणी को सुनकर उसे अपना आत्म समझ लेती है। इनका मानना है कि उसकी मधुर आवाज इनके हृदय को छेदने का कार्य कर रही है। वह मधुर आवाज में बोलने

वही मोर तथा चातक को भी चातक मानते हैं।

घनआनन्द वियोग की पीड़ा में अत्यधिक डूबी हैं।
घनआनन्द जीवन सुजान बिना सबहि सुख साज समाज टरे।
तन पर पमर से लागत हैं अब आनि के बीच पहार परे॥
विरह की हवा से बनला जीव पतंग के समान उड़ता जा रहा है।
बनकी आँखों में आंसुओं का निरंतर प्रवाह दिखाई देता है। प्रेम की पीड़ा बनके हृदय में कष्ट को जन्म दे रही है –
जबते बिसरे घनआनन्द सुजान प्यारे, (3)
तब ते अनोखी आगी लागि रही चाह की।

यह दुःख कभी बनका पीछा नहीं छोड़ता है। वियोग की मार्मिक दशाओं का जैसा उल्लेख बनोंने किया है, हिन्दी-साहित्य में वैसा कोई अन्य कवि नहीं कर सका है। घनआनन्द ने कान, उपालम्भ, प्राण और नेत्र – इन चारों आधारों का चमत्कार प्रयोग किया है। बनके

प्रेम नेना रेत बाँधे के समान लग रहा है।

4. (वेदना रूप में प्रकृति चित्रण)
प्रकृति - चित्रण → संयोग में सहायक प्रकृति वियोग में दुखदायक बन जाती है। घनआनन्द ने मुख्य रूप से प्रकृति चित्रण उद्दीपन रूप में किया है। उन्होंने प्रकृति का आलंबन के रूप में चित्रण कम किया है। वियोग में विरहनी नायिका के लिए रात्रि अंगारकर, चन्द्रमा की चाँदनी अग्नि के समान जलाने वाली, वर्षा की बूंदें बाण के प्रहारों के समान असहनीय और विभिन्न पक्षियों – मयूर की केका ध्वनि कोयल की कु-कु और पपीहे की पी-पी की पुकार प्रेमी को हरने वाली लगती है। पुष्पों की मादक सुगंध उसके वियोग को बढ़ाने वाली होती है।

5. भक्ति - भावना → इनमें भक्ति-भावना उत्पन्न होने की निम्नलिखित कारण रहे हैं –
i) सुजान के प्रति प्रेम।
ii) वियोग और ~~एक्सेप्ट~~ क्लेश की अधिकता।

Scanned with CamScanner

(iii) निंबार्क सम्प्रदाय के अनुगामी होना।
(iv) ब्रज - महिमा से पुलक होना।

उनकी भक्ति - भावना

उन्होंने प्रेम को भी और राधा एवं कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति भी। के उपासी सुजान के सारा उनके साथ चलने से मना कर देने पर उन्होंने विरह में तप्त होकर अपने हृदय की दुखित भावनाओं को प्रकट किया है। धीरे - धीरे सुजान के प्रति उनकी आसक्ति वैराग्य में परिवर्तित हो गयी। कई बार वियोग और क्लेश की अधिकता से पीड़ित होकर उनका हृदय ईश्वर की तरफ उन्मुख हो गया है। उनकी जीवन में कृष्ण और राधा की भक्ति ने डूब कर संसार को माया जाल से अलग कर दिये। उन्होंने कुछ रचनाओं में ब्रज की भूमि के प्रति अपने अटूट प्रेम को प्रकट किया है।

6. प्रेम और सौन्दर्य की गहन अनुभूति → उन्होंने प्रेम का वर्णन हृदय की गहराईयों में डूब कर किया है। संयोग की अपेक्षा वियोग का अधिकता से वर्णन किया है। उन्होंने अपनी प्रेयसी की छवि के रमणीय चित्र उपस्थित किये हैं। उन्होंने नायिका के नखशिख का वर्णन न करके उसके सम्पूर्ण सौन्दर्य के प्रभावशाली चित्र उपस्थित किये हैं। कुछ स्थानों पर उन्होंने कृष्ण के सौन्दर्य का भी सुंदर चित्र खींचा है।

7. वाक्यगत शुद्धिदोष की ~~मीमांसा~~ विवेचना → उन्होंने न तो व्याकरण - ग्रन्थ पढ़ा और न ही वाक्य के अंगों को ध्यान में रख कर वाक्य की रचना की। उन्होंने बन्धनों से मुक्त होकर वाक्य की रचना की। वे किसी आम्नाय शाला की रक्षा के गुलाम नहीं थे। उनका व्याकरण पर ध्यान नहीं के बराबर था और इनका लक्ष्य सर्वदा भावपक्ष बना रहा।

8. आसक्ति की प्रधानता एवं संदेश-प्रेषणीयता → आसक्ति के द्वारा प्रेम में स्थिरता

Scanned with CamScanner

आती है। इसके बाद तो जो शोक न सहकर एक शब्द रहता है। घनआनन्द का प्रेम जल में रहने वाली मछली से भी बढ़कर है क्योंकि मछली जल से अलग होने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है इसलिए वह लगभग है जबकि घनआनन्द अपनी प्रेयसी सुजान के विरह में तड़पते हुए उसके दर्शन के लिए व्याकुल हैं। वे उसके प्रेम के मार्ग से एक कदम भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं।

उनके प्रेम में विरह की प्रधानता होने के कारण वह सुजान को संदेश भेजते रहते हैं। वे भी महाकवि कालिदास के समान सुजान को मेघ के द्वारा संदेशा भेजते हैं। कवि पवन के द्वारा सुजान को संदेशा भेजते हुए यह कहते दिखाई देते हैं कि तुम सुजान के पैरों की धूल को उड़ाकर ले आओ जिससे मैं अपनी आँखों में ज्योति प्राप्त कर सकूँ।

1. संयोग शृंगार का वर्णन- प्रेम में सोने होली खेलती हुई नायिका का अत्यधिक कुशलता चित्र उपस्थित किया है। यह नायिका अत्यधिक कोमल है। उन्होंने राधा और कृष्ण - दोनों के रूप तथा सौन्दर्य का वर्णन किया है।

राधा लज्जा से झुक गयी है, तिरछी दृष्टि से देख रही है, उसका गोरा मुख है, सुन्दर लिलार है। वह मुख मुस्कान से पूर्ण है, उसकी पन्नावली चमक रही है। गले में मोतियों की माला धारण की हुई है और वह अत्यधिक सौन्दर्य से युक्त है। अन्त में घनआनन्द नायिका के सौन्दर्य के विषय में कहते हैं।-

(5) सावरे रूप की रीति अनूप नयो - नयो लागत ज्यों - ज्यों निहारिये
ज्यों - ज्यों उन आँखिन आनि अनोखी अमानि कहूँ नहिं आनि बिहारिये।

10. प्रेम के प्रति सैद्धान्तिक विषमता → घनआनन्द का प्रेम जीवन का आनन्द है और विषम प्रेम जीवन की साधना है। स्वच्छन्द कवियों ने इस प्रेम की साधना को जीवन का मंत्र माना है। इनका प्रेम अधिकतर विषम है। घनआनन्द ने सुजान को अनेक उपालम्भ दिये हैं। यह अनेक प्रेम में सहन जलने को तैयार है। यह सुजान के न चाहने पर भी उसके प्रति अपने आस्था को दर्शाते हैं -

चाहो अनचाहो जान प्यारे पै आनन्दघन
प्रीति - रीति विषम सु रोम - रोम रमी है।

घनानन्द के काव्य का मूल्यांकन →

i) भाषा → इनकी भाषा सरस ब्रज भाषा थी। यह भाषा भावों के अनुसार चलने वाली थी। कुछ स्थानों पर इनकी भाषा में विरोधी भावों का चमत्कार देखने को मिलता है। इन्होंने ठेठ ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे-
थल (पता)
पाड़ (उत्कण्ठा)
बधूरा (बवण्डर)
बैह (छौंक) इत्यादि। इनकी भाषा में जीवन्तता है। इन्होंने स्थान-2 पर मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है जैसे- माथु पड़ना सुहावरे के प्रयोग के लिए इन्होंने इस पंक्ति का प्रयोग किया है -
प्राण से साथ यही पर हाथ।
कुछ स्थानों पर इन्होंने जनपद के शब्दों का प्रयोग किया है जैसे-
लरतै (जंगल)
बैठनैहर (मैके घर)
बोड़ी (बच्चा) इत्यादि। इन्होंने तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है जैसे-
आथिर (अस्थिर)
निरबाय (निष्काम)
सुतंत्र (स्वतंत्र)

निभा (निभना) इत्यादि। इनकी भाषा में उक्ति-विचित्रता का प्रयोग भी दिखाई देता है। भाषा पर इनका असाधारण अधिकार था। इनके रूप-वर्णन में चित्रात्मकता के दर्शन होते हैं -
अंग अंग तरंग उठैं दुति की
परि यौं मनौं रूप अबै धर च्वै।
कुछ स्थानों पर इन्होंने स्वनिर्मित नये शब्दों का प्रयोग किया है जैसे -
रसमेस, गुरकानि, बबुझर इत्यादि।

ii) छन्द-योजना → ~~यह रीति काल की विशेषता~~ मुक्त धारा के प्रतिनिधि कवि थे। अतः इनका छन्दों के प्रति कोई विशेष मोह नहीं था। फिर भी इनके काव्य में कवित्त, सवैया, दोहा और चौपाई इत्यादि छन्दों का प्रयोग मिलता है। कवित्त और सवैया इनके प्रिय छन्द रहे हैं। सवैया का एक उदाहरण प्रस्तुत है -
पहिले घनआनन्द सींचि सुजान वही,
अँखियाँ अति प्यार पगी।

iii) अलंकार-योजना → इन्होंने अपने काव्य में स्वाभाविक रूप से अनुप्रास, यमक, रूपक, श्लेष, उल्लेखा,

Scanned with CamScanner

अर्थान्तरन्यास, विभावना, विशेषोक्ति, असंगति और संदेह इत्यादि अलंकारों का प्रयोग किया है। श्लेष अलंकार का एक उदाहरण देखिए -

घनआनन्द जीवनमूल है, कुछ मेरियो पीर न लीजै।

इस उदाहरण में घनआनन्द शब्द के दो अर्थ हैं -
- एक स्वयं का नाम
- दो आनन्द की वर्षा करने वाले बादल।

साथ ही जीवनमूल के दो अर्थ हैं -
- एक जीवन देने वाले
- दो जल देने वाले।

iv) रस-योजना → इन्होंने अपने काव्य में शृंगार, शांत और ~~वीभत्स~~ वीभत्स इत्यादि रसों का प्रयोग किया है और इनमें मुख्यतः शृंगार रस के दोनों भेदों - संयोग एवं वियोग का वर्णन किया है। सर्वप्रधानता वियोग शृंगार की है।

v) गुण-योजना → इन्होंने काव्य के तीन गुणों में से प्रसाद एवं माधुर्य गुणों का प्रयोग अपने काव्य में किया है।

vi) शब्द-शक्ति-योजना → इन्होंने अपने काव्य में लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्तियों का प्रयोग किया है। ये लक्षणा शब्द-शक्ति के दो प्रकार ले जा सकते हैं। इन्होंने लक्षणा शब्द-शक्ति के अंतर्गत विशेषतः मानवीकरण और विशेषण विपर्यय अलंकारों का प्रयोग भी किया है।

Scanned with CamScanner

"घनआनंद प्रेम की पीर के कवि थे।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"घनआनंद साक्षात् रस मूर्ति थे।" इस कथन की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

अथवा

घनानंद की प्रेम-व्यंजना का वैशिष्ट्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

"अपनी विरह-वेदना की उत्कीर्णता को न जाने कितने प्रकार से इन्होंने व्यक्त किया है।" इस कथन के आलोक में घनआनन्द के वियोग-वर्णन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

घनआनन्द की विरह-व्यंजना को सोदाहरण विश्लेषित कीजिए।

वेदना हृदय की पीड़ा है तथा विरह प्रेम की अवस्था है। प्रेम की तीव्रता विरह से मापी जाती है। प्रेमी का हृदय विरह के समय दुर्बलता, उद्वेग, व्याकुलता और असुरक्षा से ग्रसित होता है। घनआनन्द की विरह-वेदना स्वयं के सारा अनुभूति किये जाने से

अत्यधिक मार्मिक और प्रभावशाली बन गयी है। उसमें क्रमक एवं तरल शब्द आंतरिक हो विहारी के विरह-वर्णन में जहां शारीरिक ताप और विरह से उत्पन्न दुर्बलता का अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख मिलता है, वहीं घनआनन्द के विरह-वर्णन में हृदय की आंतरिक हलचल दिखाई देती है और उनका वियोग बाहर से एकदम शांत और गंभीर दिखाई देता है। इनकी विरह-वेदना कृत्रिम नहीं है और इसमें हृदय पक्ष की प्रधानता, अकृत्रिमता, नवीनता और कष्ट सहिष्णुता इत्यादि गुण दिखाई देते हैं। इनकी प्रेम-व्यंजना सूक्ष्म है और उसमें स्थूलता का अभाव देखा जाता है। इनके विरह-वर्णन को हम निम्नलिखित प्रकार से अभिव्यक्त कर सकते हैं-

1. विरह की सहजता → इनके हृदय में विरह का मूल कारण सुजान के सौन्दर्य के प्रति आसक्ति है। इसलिये उसकी विभिन्न छवियाँ इनकी कल्पना में घूमती रहती हैं। यह रूप उनके हृदय में इस तरह बस गया है कि उसे निरंतर देखने की तीव्र इच्छा इनके हृदय में बनी रहती है। आंखों को कुछ ऐसी आदत हो गयी है कि

ये सुजान के रूप को देखकर ही मुग्ध होती हैं-

जगरे रूप की रीति अनूप नयो-नयो लागत ज्यों-ज्यों निहारिये।
ज्यों-ज्यों इन आंखिन बानि अनोखी
अमानि लहै नहिं आनि निहारियै॥

घनआनन्द जो मधुर आभास जगाते वाले पातियों की आवाजें बुरी लगती हैं। उनका हृदय विरह के कारण पंख के समान उड़ता हुआ-सा महसूस होता है। उनकी आँखों में निरन्तर आंसुओं का प्रवाह बिबाई देता है जो उनके हृदय में प्रेम की पीड़ा को प्रकट कर रहा है-

जबते निबरे घनआनन्द सुजान प्यारे,
तब ते अनोखी भांजी लागे रही चाह की।
उन्हें विरह में संयोग की सुखद चेष्टाएँ अत्यधिक कष्टकर लगती हैं-

घनआनन्द मीत सुजान बिना सबही सुख-साज समाज तेरे।
अब हार पहार से लागत हैं अब आनि के बीच पहार परे॥

2. मार्मिक अनुभूति का चित्रण → इनके विरह-वर्णन में हृदयता का समावेश बिल्कुल नहीं है। उसमें स्वयं के सच्चे अनुभव की गयी वेदना को सरल एवं स्वच्छन्द चित्रण किया गया है। जहाँ मार्मिक अनुभूतियों का चित्रण होता है, वहाँ आडम्बर और कृत्रिमता के लिए स्थान नहीं होता है। विरही व्यक्ति की दशा बड़ी ही विचित्र होती है और उसे अनेक विरोधाभासों से जीना पड़ता है। कुछ इसी प्रकार की दशा घनआनन्द के विरह में बिबाई देती है।

3. प्रेम की निष्ठुरता / कठोरता → इनका प्रेम विषम है।
यह सुजान के प्रति अपने हृदय में जितना प्रेम रखते हैं, सुजान इनके प्रति उतनी ही कठोरता और निर्ममता को प्रदर्शित करती है। इतना हो जाने पर भी घनआनन्द अपने प्रेम के मार्ग से कदम को पीछे नहीं खींचते हैं। वे सुजान को उपालम्भ देते हुए कहते हैं कि तुमने पहले तो अपने हठ और मधुर वचनों से मुझे अपने प्रेम-जाल में कैद कर लिया और अब उसी हृदय को वेदना से व्याकुल कर रहे हो-

मीठे-मीठे बोल बोलि ठगी पहलें तो तब,
अब प्रेम प्यारत लहौ यौं अन न्याय है?

Scanned with CamScanner

अन्तः प्रकृतियों की अधिकता → इनके विरह में मनोवेगों की प्रधानता है और इसे इन्होंने अपनी वेदना के द्वारा अपने काव्य में उकेरा दिया है। ये अन्य रीति काल के कवियों के समान शास्त्रीय नियमों का पालन न करके अपने हृदय में उठने वाले भावों का वास्तविक वर्णन करते हैं। इनका हृदय उत्साहन प्रत्येक क्षण व्याकुलता के साथ जलता रहता है और इस कारण ये धैर्य को धारण नहीं कर पाते हैं। इनका मानना है कि यदि सुजान की प्राप्ति असंभव है तो वे धरती और आकाश से भी मुक्त करने के लिए तैयार हैं अर्थात् इनका मानना है कि सुजान की प्राप्ति के लिए वे असंभव कार्य को भी संभव कर सकते हैं।

5. रागात्मक-भावना → इनका प्रेम सुजान के प्रति एकनिष्ठ था। सुजान या इनके प्रति प्रेम निश्छलता भावना से मुक्त दिखाई नहीं देता है इसीलिए घनआनन्द के हृदय में इसके प्रति उपालम्भ के भाव भरे हुए हैं। इस उपालम्भ में इनका सुजान के प्रति तीव्र प्रेम प्रकट होता है। ये विरह-वेदना से दुःखी होकर स्वयं को दीन, हीन और एकनिष्ठ प्रेमी बताते हैं जबकि सुजान को चतुरी, विश्वासघाती, निर्दय और निर्मोही बताते हैं।

6. विषम प्रेम का चित्रण → विरहीय प्रेम में संयोग एवं वियोग के भाव देखे जाते हैं किन्तु एकपक्षीय प्रेम में हृदय की तड़प और प्रिय की कठोरता दिखाई देती है जिससे वह हृदय मार्मिक बन जाता है। घनआनन्द का सुजान के प्रति प्रेम भी एकपक्षीय था इसीलिए वह विषम प्रेम के अंतर्गत आता है और उसमें हृदय की वेदना और प्रिय की कठोरता दिखाई देती है। घनआनन्द के हृदय में सुजान के लिए जितनी पीड़ा और व्याकुलता थी, उतना अंश मात्र भी सुजान के हृदय में दिखाई नहीं देता है। घनआनन्द इस बात की परवाह न करके सुजान के प्रति अपने प्रेम को तैयार रखते हैं - यही अनन्यता प्रेम प्यार वे आनन्दघन। रीति - रीति विषम रु प्रेम - प्रेम रमी है॥

7. प्रेम में एकनिष्ठता → घनआनन्द का सुजान के प्रति प्रेम एकनिष्ठ और अनन्य था। सुजान ने

अपने भाव निश्वासपात्र लिखा लिन्तु ते
जीवनपर्यन्त सुजान से प्रेम करते रहे।
इनका मानना था कि प्रेम का मार्ग
सरल, सीधा और निश्छल होता है
और उसमें ऊपर और चतुराई के लिए
कोई गुंजाइश नहीं होता है
आधे झूठी स्नेह को भाखा है जहाँ नेकु
सयानप बाँक नहीं।
जुग जीत धर्यो पाती हो भाषा भन लेहु पै
नेकु कहू चतुराक नहीं॥

कष्ट सहिष्णुता से युक्त → घनआनन्द के प्रेम में उस सहिष्णुता का गुण विद्यमान है। वे उस प्रकार के कष्ट को सहन करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए प्रेम सुजान के प्रति हृदय में कैसा उत्तम करने का एक मात्र उद्देश्य जीवनपर्यन्त बनाए रखा। वे वेदना से युक्त एक ऐसे प्रेमी हैं जिनके हृदय में गत-दिन विरह बना रहता है और नेत्रों से आँसू प्रवाहित होते रहते हैं।

उनका मानना है कि
इस पीड़ा में प्रेमी बिना जीवन के

जीता है और बिना मृत्यु के मरता है-
(2) रोवनो न जानो हो सोवनो न सोवनो है,
खोय खोय आप ही में चेरक लहीन है।
जीवन मरन जीव मीच बिना बन्यो आय
सम! जीन बिधि यही नेही की रवनि है॥
ये अपना शेष जीवन सुजान की स्मृति में
व्यतीत कर देते हैं उनके प्रेम में
आडम्बरों से रहित स्वच्छन्दता दिखाई
देती है। रात्रि के समय उनकी विरह-
वेदना हृदय को कंपित कर देती है।
प्रेम की पीड़ा से युक्त होकर वे अपने
प्रिय सुजान को बादलों के द्वारा संदेश
भेजते नजर आते हैं-
परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य
जथारथ ह्वै।
बरसौ हरसौ सुजान के आँगन मोअँसुवान
को ह्वै बरसो॥

(3) उद्दीपन रूप में प्रकृति - चित्रण → संयोग में प्रकृति सुखदायक बन जाती है। घनआनन्द ने मुख्य रूप से प्रकृति - चित्रण उद्दीपन रूप में किया है। उन्होंने प्रकृति का आलंबन के रूप में चित्रण किया है। वियोग में विरहणी

प्रेमिका के लिए प्रेमी भयंकर सन्तप्त की चाँदनी अग्नि के समान जलाने वाली वर्षा की बूंदे बाण के छुरों के समान असहनीय और विभिन्न पक्षियों मयूर की कूक दबानि कोयल की कू-कू और पपीहे की पी-पी की पुकार प्राणों को हरने वाली होती है। पुरवा की शीतल सुगंध उसके वियोग को बढ़ाने वाली होती है। प्रेमिका आसक्ति की सघनता एवं संकेश ~~प्रेमिका~~ के आसक्ति के सारा प्रेम में स्थिरता आती है। उसके बाद दो का भाव न रहकर एक भाव रहता है। घनआनन्द का प्रेम जल में रहने वाली मछली से भी बढ़कर है क्योंकि मछली जल से अलग होने पर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है इसलिए वे कायर है जबकि घनआनन्द अपनी प्रेयसी सुजान के विरह में तड़पते हुए उसके दर्शन के लिए आकुल है। वे उसके प्रेम के मार्ग से एक कदम भी पीछे हटने को तैयार नही है।

उनके प्रेम में विरह की प्रधानता होने के कारण यह सुजान संदेश भेजते रहते है। ये भी महाकवि कालिदास के समान सुजान को मेघ के द्वारा संदेश भेजते है।

अति पवन के सारा सुजान को संदेश भेजते हुए यह कहते दिखाई देते है कि तुम सुजान के पैरो की धूल को उठाकर ले आओ जिससे मैं अपनी आंखो में थोड़ी जगह कर सकें।

प्रेम से युक्त हृदय की कोई ऐसी वृत्ति नहीं है जिसका चित्रण घनआनन्द ने न किया हो। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने इतिहास-ग्रन्थ "हिन्दी साहित्य" का इतिहास" में लिखते है- "प्रेम की गूढ़ (गहरी) अन्तर्दशा का उद्घाटन जैसा घनआनंद ने किया है वैसा हिंदी के किसी अन्य शृंगारी कवि ने नहीं।"

Scanned with CamScanner

घनानन्द की शृंगारिकता

घनानन्द में संयोग का वर्णन वियोग की अपेक्षा कम है, यह स्वाभाविक ही है। जैसा कि 'डा० बच्चनसिंह' ने मत व्यक्त किया है कि इन कवियों के जीवन में संयोग के अवसर कम आए हैं। घनानन्द ने वियोग का वर्णन आत्म-कथन के रूप में किया है किन्तु संयोग के लिये कृष्ण तथा राधा अथवा नायक तथा नायिका का माध्यम ग्रहण किया है। 'संयोग शृंगार' के अन्तर्गत घनानंद के काव्य के मुख्य पक्ष हैं—

(i) आलम्बन का रूप-वर्णन, (ii) काम चेष्टाएँ, (iii) चिन्तन के प्रसंग, (iv) त्यौहारों आदि का चित्रण तथा (v) उद्दीपन।

घनानन्द ने अपनी प्रेमिका के लावण्य-सौन्दर्य का अच्छा चित्रण किया है। इस चित्रण में स्थूलता का अभाव है। "अपने प्रिय का रूप चित्र खींचने में घनानन्द ने रीतिबद्ध कवियों की भाँति स्थूल, अप्रधान यौन अंगों (Secondary sexual character) के आकार और व्यापार का वर्णन प्रस्तुत किया है। वे मुख्यतः प्रिय के सरल सौन्दर्य पर रीझे हुए हैं।"[1]

---

१. डा० बच्चनसिंह : रीतिकालीन कवियों की प्रेम-व्यंजना, पृ० २३६।

घनानंद ने कहा है कि प्रिय का सौन्दर्य इतना महान है कि उसे उक्ति के लघु आकार में बाँध पाना सम्भव नहीं, लाज भरी चितवन, गोरे बदन इत्यादि की रेखाओं में बँधा हुआ यह सौन्दर्य अधिकतर मुद्राओं का सौन्दर्य है, छवि का सौन्दर्य नहीं—

"लाजनि लपेटी चितवनि भेद-भाय-भरी,
लसति ललित लोल-चख तिरछानी मैं।
छवि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।
दसन-दमक फैलि हियें मोतीमाल होति,
पिय सों लड़कि प्रेम-पगी बतरानि मैं।
आनन्द की निधि जगमगति छबीली बाल,
अंगनि अनंग-रंग दुरि-मुरि जानि मैं॥"

प्रिय की मुस्कान और मुड़ने की उसकी मुद्रा इस पद में बड़ी मनोहरता से व्यंजित है—

"वहै मुसक्यानि, वहै मृदु बतरानि, वहै,
लड़कीली बानि आनि उर में अरति है।
वह गति लैन, औ बजावनि ललित बैन,
वह हँसि दैन, हियरा तें न टरति है।
वहै चतुराई सों चिताई चाहिबे की छवि,
वह छलताई न छिनक बिसरति है।
आनन्द-निधान प्रान प्रीतम सुजान जू की,
सुधि सब भाँतिन सों बेसुध करति है॥"

यह वर्णन स्मृति-रूप में है। घनानन्द के रूप-वर्णनों में ही स्पष्ट किसी शरीरवती नारी का मादक स्वरूप झलक रहा है। भंगिमाओं का वर्णन उन्होंने बड़े यत्न से किया हे। 'सुजान' के अलसाने, अंगड़ाई लेने और मुड़ने के चित्र अत्यन्त चित्रात्मक हैं। घनानन्द जैसे एक स्थल पर बैठे हुए देख रहे हैं और निरीक्षण करके सुजान की मुद्राओं को, उसके रूप के विभिन्न अंगों को शब्दों में बाँधते जाते हैं। सुजान के प्रति वे चातक के समास दृष्टि लगाए

बैठे हैं—

"मन जैसे कछु तुम्हें चाहत है सु
बखानिए कैसे सुजान ही हौ।
इन प्राननि एक सरागति रावरे,
बावरे लौं लगि है नित लौं।
बुधि औ सुधि नैननि बैननि में,
करि बास निरन्तर अन्तर गौ।
उघरो जग छाय रहै घनआनन्द,
चातिक ज्यौं तकिए अब हौ।"

घनानन्द ने नायिका अर्थात् नायिका के माध्यम से राधा का चित्रण करते हुए उसके शरीर को लाड़ अर्थात् प्यार से ही निर्मित कहा है—

"तेरी निकाई निहारि छकैं,
छवि हू को अनूपम रूप बढ्यो है।
ईठि ह्वै दीठि पै नीठि कटाछनि,
भाव मनोज को चोज बढ्यो है।
आनन्द के घन राग सौं पागि,
सुजान सुहागनि आग बढ्यो है।
लाड़ ते लाड़िली होति है और,
पै तौ तन लाड़हि लाड़ चढ्यो है।"

रूप के ये चित्रण सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय तो देते ही हैं, इनसे यह भी स्पष्ट होता है कि कवि वर्णन में अत्यन्त पटु और अपने प्रिय के गुणाख्यान में अत्यन्त तत्पर है। प्रिय के चित्रण के विषय में घनानन्द का यह पद विशेषतया द्रष्टव्य है, जिसमें उन्होंने चित्रकार के कर्त्तव्य-प्रिय रूप के संसर्ग में सुन्दर वर्णन किया है—

"अंग-अंग आभा संग द्रवित ह्वै कै,
रुचि रुचि लीनी सौज रंगनि घनेरे की।
हँसनि लसनि आछी बोलनि चितौनि चारु,
मूरति रसाल रोम-रोम छवि हेरे की।

लिखि राख्यो चित्र यौं प्रवाह कवी मैनन में,
सही न परति गति उलट अनेरे की।
रूप को चरित्र है आनंद-घन जान प्यारी,
अकि धौं विचित्रताई मोचित चितेरे की॥"

इस रूप-चित्रण में रीतिबद्ध कवियों की अपेक्षा कितनी सूक्ष्मता है, पर्यवेक्षण की कितनी गहराई है, यह देखते ही बनता है। मुद्राओं का वर्णन रीतिकाल के सभी कवियों ने बड़े मनोयोग से किया है। बिहारी उसमें अतिशय कुशल हैं और पद्माकर इत्यादि कवि भी किसी प्रकार कम नहीं किन्तु घनानन्द का स्थान और ही है। ये भिन्नत्व के बल पर अतिरिक्त मान्यता के अधिकारी हैं। इनका रूपवर्णन किसी सिद्धान्त के अन्तर्गत नहीं है बल्कि हृदय पर पड़े हुए सुजान के सौन्दर्य की छाप का पुनरांकन है। 'डा० मनोहरलाल गौड़' के अनुसार घनानन्द के विषय में निम्नलिखित ६ तत्व विशेषतया द्रष्टव्य हैं—

१. उनका रूप-वर्णन किंचित् सीमा तक रीतिकाल की शैली के अनुसार चमत्कार प्रधान है किन्तु शेष व्यक्तिगत अनुभूति है।

२. रूप-वर्णन में द्रष्टा की आसक्ति झलकती है। चाह के रंगभीजे हृदय, तथा रीझ-बावरे नेत्रों से देखकर रूप का वर्णन किया है।

३. प्रेमिका का रूप मादक, पूर्ण विकसित तथा विलासी है और उससे वेश्या-प्रेम का अनुमान होता है।

४. शारीरिक सौन्दर्य के संश्लिष्ट चित्रण भी किए हैं।

५. सौन्दर्य की अन्तरदीप्ति जितनी अधिक वर्णित हुई इतना बाह्य स्थूल रूप नहीं।

६. अनुभूति सत्य होने से उसकी अभिव्यक्ति के लिये नये प्रतीक कवि ने प्रयुक्त किये।[1]

काम-चेष्टाएं

काम-चेष्टाएँ जैसे काव्य-व्यापार का नियन्त्रण है वाणी, वेश-भूषा और शरीरांगों के द्वारा नायक-नायिका के अन्तर का 'काम' विभिन्न रूपों और प्रसंगों में उमड़ता रहता है। घनानन्द ने सुजान के नाचने, अंग-मटकाने

१. घनानन्द और स्वच्छन्द काव्य—पृ० ३१२-१३

इत्यादि का ऐसा वर्णन किया है कि उसे देखकर उनका मन बेसुध हो गया, उनकी बुद्धि की गति विमूत हो गई—

"रूप मतवारी घनआनंद सुजान प्यारी,
घूमरै कटाछि घूम करैं कौन पै फिरैं।
नाच की चटक लसै अंगनि मटक-रंग,
साढ़िली लटक-संग सोयन लगे फिरैं।
अमिनै-निकाई निरखत ही बिकाई मति,
गति भूली डोलैं सुधि तोयौं न लहौं हिरैं।
राते तरबानि तरैं घूरे घोप चाढ़ पूरे,
पाँवड़े सौं प्रान रीझि हूँ कनावड़े गिरैं।"

इसी प्रकार सुजान के वीणा-वादन इत्यादि से घनानन्द के हृदय में जो भावांदोलन होता है, उसका वर्णन उन्होंने निम्न छन्द में किया है—

"जान प्रवीन के हाथ को बीन है,
सो चित राग भर्‌यो नित राजै।
सो सुर साँच कहूँ नहिं छाँड़त,
ज्यों ही बजावै लिएँ मन बाजै।
भावती मोद मरोड़ हिए घन—
आनंद सो गुने रंग सौं गाजै।
प्यार-सो तार सु ऐंचि के तोरत
क्यों, सुघराइयै लावत लाजै॥"

कामानुभूति का पहला स्पर्श एवं परिचय कामचेष्टाओं के द्वारा ही दिया जाता है। मनोविज्ञान के अनुसार कौमार्य की अवस्था में व्यक्ति के कायं अनजाने ही उसके अन्तर में एवं अंगों में फूटते हुए काम को प्रतिध्वनित करने लगते हैं तब वाणी चाहे मौन हो किन्तु भाव-स्पन्दन अभिव्यक्त होता रहता है। अनजाने ही भाव अनायास रूपों में बिखरते रहते हैं। सुजान की ऐसी ही चेष्टाओं के प्रभाव का वर्णन इन पंक्तियों में है—

"चेटक रूप-रसीले सुजान
दई बहुतै दिन नेकु दिखाई।

कौंध मैं चौंध भरे चख हाय।
कहा कहौं हेरनि ऐसें हिराई।
बातैं बिलाय गई रसना पै
हियो उमग्यो कहि एकौ न आई।
साँच कि सभ्रंम ही घनआनंद,
सोचनि ही मति जाति समाई।"

ये काम-चेष्टाएँ सूक्ष्म-निरीक्षण का भी परिचय देती हैं। साथ ही इनसे घनानन्द के अन्तर की प्रेमानुरक्ति मुखर हो उठती है। संयोग-शृंगार में काम-चेष्टाओं का न जाने कितना वैविध्य हो सकता है। घनानन्द ने वैविध्य की अपेक्षा गहराई को ग्रहण किया है और विभिन्नता में उलझने की अपेक्षा कुछ मुद्राओं को भी व्यक्त किया है। कई स्थलों पर बाह्य चेष्टाओं द्वारा आन्तरिक भावों की अभिव्यक्ति बहुत सुन्दर हो उठी है—

"मुख-स्वेदकनी मुखचन्द बनी,
बिथुरी अलकावलि भाँति भली।
मद-जोबन रूप, छकीं अंखियाँ,
अवलोकनि आरस - रंग - रली।
घनआनंद ओपित ऊँचे उरोजनि,
चोज मनोज के ओज दली।
गति ढीली लजीली रसीली ससीली,
सुजान मनोरथ बेलि फली॥"

ऐसा चित्रण उनकी प्रतिभा का परिचायक है। मुद्रा एवं चेष्टा का शब्दांकन कर पाना समर्थ कवि का ही कार्य है। घनानन्द चित्रण में अत्यन्त समर्थ थे, इसमें सन्देह नहीं। नायिका के अंगों की बारीकियों को वे शब्दों में बाँध पाने में समर्थ हुए हैं। यह वर्णन कल्पनागत नहीं है, इनमें अनुभूति की पकड़ है, घनानन्द का अन्तर इनमें रमा हुआ है।

सुजान के साथ उनके सम्बन्ध का स्तर अत्यन्त व्यक्तिगत था, यह इसके परिचायक चित्र हैं। चेष्टाओं के साथ ही वाणी-व्यापार के माध्यम से भी कहीं-कहीं घनानन्द ने अच्छा सौंदर्य उत्पन्न किया है। नायिका की यह उक्ति कितनी उद्दीपक, कितनी नियन्त्रण भरी है—

Scanned with CamScanner

"आतुर हूं रस-आतुर होहु न
बात समान की जात क्यौं चूके।
ऐसी अठानगि ठानत हौ कित,
धीर धरौ न, परौ ढिग ढूके।
देखि जियौ, न छियौ घनआनन्द,
कोंबरे अंग सुजान वधू के।
चोली चुनावट चीर्हें चुभै चपि,
होत उजागर दाग उतू के।"

घनानन्द ने कृष्ण और गोपिकाओं के माध्यम से भी शृंगार की काम-चेष्टाओं के अच्छे वर्णन किये हैं। कृष्ण-काव्य-परम्परा में घनानंद सूर के काफी निकट हैं। राधा कृष्ण पर रीझकर अनेक प्रकार से उनसे लाड-लड़ाई करती है। घनानंद ने निम्नलिखित उक्ति के माध्यम से नायिका के कटाक्षों और नायक के रस-प्राण का बड़ा व्यंजक वर्णन किया है—

"हैं उनए सु नए न कछू, उघटैं
कित ऐंड अमेंड अयानी।
बैन बड़े बड़े नैनन के बल,
बोलति क्यों है इती इतरानी।
दान दिएं बिन जान न पाइहै,
आइहै जो चलि खोरि बिरानी।
आगें अछूती गई सो गई,
घनआनन्द आज भई मनमानी॥"

इन वर्णनों से यह भी स्पष्ट होता है कि कवि काम-चेष्टाओं की पहचान में निपुण है। रीतिबद्ध कवियों द्वारा वर्णित चेष्टाएं कुछ अधिक स्थूल और वासनामय हैं। घनानंद की रचना में उनका स्वरूप किंचित् भावपरक अधिक है, अंगपरक कम।

मिलन के प्रसंग

स्वच्छ कवियों के लिये संयोग-अवस्था का वर्णन सामान्यतया कुछ अप्राकृतिक ही है। घनानंद ने कुछ तो त्यौहारों के अवसर पर नायक-नायिका

में मिलन-प्रसंगों का चित्रण किया है और कुछ सामान्यतया सुजान शब्द देकर राधा और कृष्ण के 'सम्भोग-पक्षों' का वर्णन किया है। 'सुरति' और 'सुरतांत' इत्यादि के परम्परागत वर्णन इन कवियों में बहुत कम हैं। जहाँ इस प्रकार के वर्णन किये भी गये हैं वहाँ कवि का उद्देश्य अश्लील वर्णन के द्वारा किसी प्रकार भी ऐन्द्रिय उत्तेजना को जन्म देना ही नहीं बल्कि अपने अन्तर के भावप्रतिबिम्ब को और उल्लास को व्यक्त करना है। निम्न पद में विलास का किंचित् स्थूल किंतु सूक्ष्मप्राय चित्र है—

"पौढ़े घनआनंद सुजान प्यारी पलंक,
परे पन अंग तऊ मन रंक-गति है।
भूषन उतारि अंग अंगहि सम्हारि नाना,
रुचि के विचार सों समोय सोभी मति है।
ठौर ठौर लै लै राखें औरें और अभिलाखें,
बनत न भाखें तेई जानें दसा अति है।
मोद-मद-छाके घूमें रीझि भीजि रस झूमें,
गहैं चाहि रहैं घूमें अहा कहा रति है।"

इसी प्रकार 'सुरतांत' के वर्णनों में स्थूलता बहुत कम है। वर्णन के आग्रह से स्थूलता का आ जाना थोड़ा बहुत क्षम्य भी है। निम्नलिखित पद में रात्रि के अंत में नायिका की अलसित शोभा [illegible] सौंदर्यमय है—

"रस-आरस भोय उठी कछु सोय
लगी लसैं पीक-पगी पलकैं।
घन आनंद ओप बढ़ी मुख औरैं
सु फैलि फबीं सुथरी अलकैं।
अंगराति जंभाहि लजाति लखें अंग
अंग अनंग दिपैं झलकैं।
अधरानि में आधिरैं बात धरैं
लड़कानि की आन परैं छलकैं॥"

विलास के ऐसे चित्र रीतिबद्ध कवियों के चित्रों के विरुद्ध कितने पारदर्शी एवं कितने मर्यादामय हैं। विलास-चेष्टाओं के अंतर्गत स्थूलता का पूर्ण निषेध

Scanned with CamScanner

करके घनानंद ने कहीं-कहीं बड़े सूक्ष्म शब्दों में चित्र पूरा कर दिया है और ऐन्द्रियानुभूति का स्पर्श भी नहीं जाने दिया है।

घनानंद का एक छंद है जिसमें मादक वातावरण और उद्दीपक प्रकृति का चित्र पूरा है। मधुता कुंज है। फूल भी है किंतु अश्लील विलास-चेष्टाएँ नहीं हैं। यही कवि की कला की मर्यादा है। रीतिबद्ध काव्य के विरोध में काम-व्यापार का स्पष्ट चित्रण इतनी बारीकी से किंतु इस प्रकार बचाकर केवल घनानंद ही कर सकते थे।

राधा-कृष्ण के माध्यम से किये गये मिलन प्रसंगों का वर्णन घनानंद के लिये और भी श्रेय की बात है, क्योंकि रीतिकाल की कविता एक बहुत बड़ी आड़ है जिसके पीछे अवतारों की विलास-लीलाओं का नंगा नृत्य इन कवियों ने देखा और किया है। स्वच्छंदता का आग्रह इस रूप में भी सबल और समर्थ है।

त्यौहारों आदि का चित्रण

घनानंद ने संयोग-शृंगार के अन्तर्गत राधा-कृष्ण के परस्पर संयोग को त्यौहारों के साथ सम्बन्ध सम्बद्ध करके सुन्दर अंकन किया है। त्यौहार जीवन को रस-परिपूरित करते हैं। वे जीवन में भी जीवन डाल देते हैं। ब्रज के त्यौहारों में 'फाग' का विशेष महत्व है। राधा और कृष्ण के परस्पर फाग खेलने के अनेक वर्णन घनानन्द ने किये हैं। गोपियों की पुलक और राधा-कृष्ण की फाग-क्रीड़ा का यह चित्र देखिए—

"सौंधे सनो अलकें बगरी मुख
जीवन जोहि सों चन्दहि चोरति।
अंगनि रंग-तरंग बढ़ी सू
किही उपमानि के पानिप ढोरति।
मोहन सों रस फाग मची,
सुभली भई हौं कबहैं हि निहोरति।
आनंद के घन रोझनि भीजि,
भिजै पठई कहा चीर निचोरति॥"

इसी प्रकार नाचती हुई बाला का यह वर्णन है जिसमें नृत्य की झंकार वर्तमान है—

"त्रिय के अनुराग सुहाग भरी,
रति हेरें न पावति कल-रकें।
रिझवारि महा रस रासि-खिलारि,
गु गावत गारि बजाय डकें।
अति ही सुकुमारि उरोजनि भार,
मरें मधुरी डग संक सकें।
लपटैं घन-आनन्द आयल ह्वै,
दृग-पायल ह्वै पुतरी-पुतकें।"

'पद्माकर' के फाग-वर्णन प्रसिद्ध हैं, उनमें चंचलता और वेग है, घनानंद के चित्रों में चंचलता की अपेक्षा 'रंग-गहनता' अधिक है। उनके चित्र कला के परिवार का अधिक अच्छा उदाहरण है।

रीतिमुक्त कवियों में 'होली-वर्णन' का प्रसंग घनानन्द में ही सर्वाधिक सुन्दर है। कृष्ण से साथ होली खेलती हुई राधा का यह चित्र रीतिकाल के तद्विषयक किसी भी चित्र से तुलनीय है—

"गोरी बाल बोरी बंस, लाल पं गुलाल मूठि
तानि के चपल चली आनंद उठान सौं।
बायें पानि घूंघट को गहनि चहनि ओट
चोटनि करति अति तीखे नैन बान सौं।
कोटि दामिनि के दलनि दलमलि, पाय
दाय जोति आय कुंड मिली है सयान सौं।
मोड़िवे के लेखें कर मोड़िबोई हाथ लग्यौ,
सो न लगो हाथ रह्यो सकुचि सकान सौं।"

इसी भाव पर 'पद्माकर' का यह चित्र है जो अधिक तरल, अधिक रस-भीजा किन्तु कम कलात्मक है—

"ऐसे कढ़े गन गोपिन के तन,
मानो मनोभव भाई से काढ़े।
त्यों 'पद्माकर' ग्वालन के डफ,
बाज उठे गजगाजन गाढ़े।

छाक छके छतहाइन में छिक,
पार्थ न छाँस छिनौ छवि डाढ़े।
केसरि सं मुख मौंजिबे को रस,
मौंजत से कर मौंजत ठाढ़े।"

त्यौहारों के वर्णन की चेतना रीतिकालीन कवियों में पर्याप्त थी, यद्यपि यह भी स्वीकार करना होगा कि इन [illegible]तों में इनका लक्ष्य जन-जीवन का प्रतिबिम्ब देना नहीं, बल्कि शृंगार-प्रसंगों के उदाहरण प्रस्तुत करना है। स्वच्छन्द कवि रीतिबद्ध कवियों की अपेक्षा जन-जीवन के अधिक निकट थे, एक प्रकार से उनका विशेष आग्रह था कि वे साधारण समाज की विभिन्न रीति-परम्पराओं इत्यादि का वर्णन कर पाएँ। घनानन्द और ठाकुर के त्यौहार वर्णन कलात्मक भी है तथा सरल भी। उन्हें सांस्कृतिक काव्य की दृष्टि से वही महत्व दिया जा सकता है जो ब्रज-संस्कृति के अंकन में सूर के त्यौहार-वर्णन का है।

उद्दीपन

उद्दीपन विभाव संयोग शृंगार के अन्तर्गत प्राकृतिक व्यापारों और दासी-चेष्टाओं इत्यादि के क्रिया-कलापों पर निर्भर करता है। कवि जहां किसी दृश्य को देखकर भावानुभूति से भर उठता है और उसके अन्तर का भाव-प्रवाह किसी भी दिशा में बह निकलना चाहता है, वहीं उद्दीपन मानना चाहिए।

स्वच्छन्द कवियों ने उद्दीपन को विशेषतया संयोग-शृंगार के उद्दीपन-विभाव से अधिक महत्व नहीं दिया। कारण यह है कि उनका प्रेम एवं शृंगार-वर्णन किसी प्रकार का खाना-पूरी नहीं है, यह सच्ची अनुभूति का रूप है। उद्दीपन एक प्रकार से बाह्य एवं स्थूल वर्णन की अपेक्षा करता है, यद्यपि उद्दीपन भाव अत्यन्त सूक्ष्म हो सकता है। सूक्ष्म के प्रति स्वच्छन्द कवियों का प्रबल आग्रह यहाँ भी दिखाई पड़ता है। भाव की सूक्ष्मता को सदैव ग्रहण किया है और बनावट तथा बाह्य स्थूलता का सदा त्याग करना चाहा है। घनानंद तथा ठाकुर की रचनाओं में उद्दीपन-विभावों का वर्णन अधिकतर सुन्दर है, साथ ही अत्यन्त काव्यमय भी। ठाकुर का यह पद देखिए,—

"पहले अपने चित्त-चेहन दै, चढ़ै
दोउ अंतर की अति पै पी।
पुनि लाज के साज समेत सबै,
सखी बीच बिछौना बिछै पै पी।
कवि 'ठाकुर' दोउन की रुचि सौं,
रस कै रबड़ै दोउ ह्वै पै पी।
अधिकाधी अधा धरसै बरसै पै,
पीरी अधा संसर्ग दै पी।"

घनानंद के वर्णन में इतनी सहजता और सरलता ही नहीं है, बल्कि उनके द्वारा किया गया वर्णन पर्याप्त सुन्दर भी है,—

प्रति पूरब पावस अवसर हिलास,
हुलस उमंग भरी सिंह कला।
उसीर सरल बेटे परम सीतल संग बैं
राधा प्रान प्यारी रति रंगनि।

जमुना तीर वा नीर ढूंढ, कंजु किलिंकि पवन मृदु डूंढ
परसि रोमांच होत सुबीते अंगनि,
वृन्दावन सम्पति दम्पति हुलसत दिखपट,
ऐसे अपनी और और उमंगनि।
आनंदघन अभिलाष भरे सींचे संयम,
रस सागर की अतुल तरंगनि।

राधा और कृष्ण के प्रेम-वर्णन में उद्दीपन के प्रसंग पर्याप्त थे किन्तु कवि ने उन्हें विस्तार से वर्णन नहीं किया है। इसका कारण यही है कि कवि की प्रकृति अनावश्यक विस्तार की नहीं है। यमुना और उसके कूल-कांतार के प्रति उनका अनुराग ही उद्दीपन के चित्रों में आ पाया है। इसका कवि-प्राय यही है कि उद्दीपन के परम्परागत काल्पनिक तत्वों के वर्णन की अपेक्षा घनानन्द ने अनुभूतिगम्य तत्वों को ही ग्रहण किया है। गोपियों के प्रेमोद्दीपन के मूल में कृष्ण की बांसुरी के स्वरों का चित्रण सुन्दर है—

Scanned with CamScanner

"कैसे धीरज रहै हाय हमैं,
मुरली धुनि धीरावै हो।"

वियोग शृंगार

शृंगार के दूसरे पक्ष 'वियोग' का वर्णन घनानन्द ने मनोयोग से किया है। संयोग में उनके सामने राधा एवं कृष्ण के रूप में नायक-नायिका वर्तमान हैं किन्तु वियोग-वर्णन में केवल उनके अपने ही अन्तर की पीड़ा आ पाई है। जिस कवि का प्रेम निश्छल हो, और जो संयोग में भी वियोग का ही संधान कर रहा हो उसके विरह में, उसके मन की व्याकुलता में अनुभूति की सच्चाई ही अभिव्यक्ति को मार्मिक बना देती है। घनानन्द के वियोग-वर्णन में सारी शास्त्रीय रस दशाएँ तो उपलब्ध हो ही जाती है, इसके साथ ही ऐसे अनेक भावरूप हैं जो शास्त्र-सीमा के बाहर नए और मौलिक हैं। घनानंद के काव्य का सर्वाधिक उत्कृष्ट भाग उनके वियोग चित्रण के पद हैं। इनमें कवि के अन्तर की कसक, सुजान के बिछोह की कुण्ठा शब्द-शब्द में झलक उठी है और उसने घनानंद की अभिव्यक्ति को भी कलती हुई प्रखर विरोधाभासमयी बना दिया है।[1]

निष्कर्ष

इस प्रकार शृंगार घनानंद के काव्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय माना जा सकता है। उनकी रचनाओं में भक्ति इत्यादि को छोड़कर विश्लेषण किया जाय तो उनके जीवन-क्रम के साथ काव्य में वर्णित प्रेम एवं शृंगार का आनुपातिक तथा कालगत क्रम स्थिर किया जा सकता है। यह कवि जीवन के आरम्भ में एक रसिक कलाकार था। उसकी यौवन अवस्था भोग-समृद्धि से पूरित थी। उसी के परिणामस्वरूप शृंगार के रस-परक और सम्भोग के सार्थक, मर्यादित चित्र खींच पाया है। यौवन में ही तथा जीवन के मध्यभाग में घनानन्द को वियोग सहना पड़ा। वियोग की मार्मिकता कल्पना के बल पर अन्तर में नहीं पहुँचाई जा सकती और घनानन्द की रचना में टीस और पीड़ा की जो भावना फूट पड़ती है, वह अनुभूति की प्रगाढ़ता का ही परिणाम है।

१. 'वियोग-वर्णन' के विशेष विस्तार के लिए 'घनानंद में वेदना-भाव' शीर्षक, अध्याय ६ देखिये।

यह अनुमान करने में भी कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि राधा कृष्ण के संयोग के प्रसंग प्रायः रीतिबद्ध-परम्परा के से हैं, उन्हें कवि के काव्य-जीवन के आरम्भ की रचना स्वीकार किया जा सकता है। वियोग-परक रचना-भाग जीवन की साधना से तपा हुआ है। अभिव्यक्ति की ईमानदारी का पल्ला घनानंद ने न संयोग शृंगार के चित्रण में छोड़ा है और न वियोग के चित्रण में। काव्य-व्यापार की यही सहज अनुभूतिमयता इनकी कविता का शृंगार है। इसी ने उन्हें 'नेह की पीर' का अमर कवि बना दिया है।

Scanned with CamScanner